मेरी खेती

Page No. 1-26 / June 2022

- खेत खलियान
- पशुपालन - पशुचारा
- मशीनरी
- सब्जी
- फल
- सरकारी नीतियां
- मासिक कृषि कार्य

+91 766 8256 275

krishan@merikheti.com www.merikheti.com

POWER AND PERFORMANCE
BEYOND IMAGINATION!!!

NEW HOLLAND
AGRICULTURE

3037
NX Plus

ESCORTS
EURO 55
POWER HOUSE
हर बूंद से मिले ज़्यादा ताक़त
EURO 55
POWERTRAC
DIESEL SAVER PLUS
EURO
POWER HOUSE
POWERTRAC

संपादकीय

किसान नेता पर कालिख ?

किसान नेता राकेश टिकैत के मुंह पर कालिख पोतने का प्रतीक स्याही फेंकना चर्चा में है। पूर्व में कालिख दिल्ली के मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल के मुंह पर भी फेंकी गई। सत्ता के गलियारों में स्याही फेंकने की सियासत के छींटे भाजपा की ओर उछलना लाजिमी है। केजरीवाल ने भी दिल्ली पर कब्जा जमाने के साथ पंजाब में जीत का परचम लहराया। प्रारंभिक दौर में उन्हें केन्द्र सरकार पर पुरजोर दबाव डालने का प्रयास किया। दिल्ली पुलिस पर केंद्र के नियंत्रण का मसला खास रहा। उन्होंने इन हालातों के बीच से मंजिल तय करने का रास्ता अपनी बुद्धिमता से निकाल लिया लेकिन किसान और किसान नेताओं की एकता किसान आंदोलन की सफलता के बाद से ही तार-तार होती चली गई। पंजाब, हरियाणा, उत्तर प्रदेश आदि राज्यों के किसान संगठन आओ नेता अनेकता में एकता को साकार करते हुए दिल्ली प्रदर्शन तक तो एक रहे लेकिन बाद में भारतीय किसान यूनियन दो फाड़ हो गई या करा दी गई।

किसान आंदोलन में सबसे ज्यादा किरकिरी और सिरदर्द सरकार को ही झेलना पड़ा। विरोध के स्वर किसी को नहीं भाते इसलिए कालिख फेंकने का आरोप किसान नेता राकेश टिकैत द्वारा सरकार पर ही लगाया गया है। श्री टिकैत कर्नाटक की राजधानी बेंगलुरु में स्थानीय चैनल द्वारा स्थानीय किसान लेता कोडीहल्ली चंद्रशेखर को लेकर दिखाए गए स्टिंग ऑपरेशन पर खुद की संलिप्तता ना होने की सफाई देने गए थे। प्रेस वार्ता के दौरान उनके मुंह पर स्याही आदि फेंकने का कृत्य हुआ।

आपराधिक रिकॉर्ड वाले नेता लोकसभा और विधानसभाओं में सुशोभित हैं लेकिन एक किसान नेता पर महज एक स्टिंग के आधार पर कालिख पोतने का साहस कुछ खास मक्सद की ओर इशारा करता है। किसान नेता राकेश टिकैत ने भी यह बात घटना के बाद विशेष साक्षात्कारों में कही।

किसानों की बेचारगी राजनेताओं के भुनाने का मुद्दा रही है। स्व महेन्द्रसिंह टिकैत के बाद किसानों की हुंकार थम सी गई। इसे चिंगारी देने का काम किसान आन्दोलन ने किया। किसान आन्दोलन के पीछे चाहे जो लोग रहे, चाहे जो बातें कही जायें लेकिन खेती किसानी के जागरूक किसान किसानों की दुर्दशा आओर हालात में सुधार न होने से मर्माहत हैं। सरकार और उसकी नीतियों की ओर वह टकटकी लगाए देखते रहे हैं लेकिन हालात हैं कि बदलने का नाम ही नहीं लेते। अनेक अनुसंधानों के बाद भी अन्न के भंडार तो भर गये लेकिन किसान परिवारों की जरूरतें पूरी नहीं हो पाई।

दिलीप यादव
मेरी खेती

श्री छेदालाल पाठक
(संरक्षक मार्गदर्शक)

डॉ. एमसी शर्मा,
सेवानिवृत्त निदेशक एवं
कुलपति आईवीआरआई इज्जतनगर

प्रो. ए पी. सिंह
पूर्व कुलपति वेटरनरी
विश्वविद्यालय मथुरा

डॉ.एस.के.गर्ग
कुलपति राजस्थान यूनिवर्सिटी ऑफ
वेटरनरी एंड एनिमल साइंस

डॉ.ओमवीर सिंह
निदेशक बीज प्रमाणीकरण
(सेवानिवृत्त) उत्तर प्रदेश

डॉ. उदय भान सिंह
डीन कृषि महाविद्यालय कुम्हेर
भरतपुर राजस्थान

श्री सुधीर अग्रवाल
(प्रगतिशील किसान)

दिलीप यादव
(विशेषज्ञ,मेरीखेती)

तेजपाल सिंह
(प्रगतिशील किसान)

कृष्ण पाठक
(विशेषज्ञ,मेरीखेती)

बेबी कॉर्न की खेती

दोस्तों आज हम बात करेंगे बेबी कॉर्न की खेती के विषय में, बेबी कॉर्न (Baby Corn) जिसे हम आम भाषा में मक्का या फिर भुट्टे के नाम से भी जाना जाता है। यह लोगों में बहुत ही ज्यादा लोकप्रिय हैं लोग इसे बड़े चाव से खाते हैं तथा विभिन्न विभिन्न तरह से इनकी डिशेस बनाते हैं। बेबी कॉर्न से जुड़ी सभी महत्वपूर्ण जानकारी जानने के लिए हमारी इस पोस्ट के अंत तक जरूर बने रहें:

बेबी कॉर्न क्या है

बेबी कॉर्न मक्के का ही एक समूह है यानी आम भाषा में कहें तो या मक्के का परिवार है बेबी कॉर्न को मक्का या भुट्टा कहा जाता है। बेबी कॉर्न रेशमी तथा कोपलें की तरह दिखते हैं। किसान बेबी कॉर्न की कटाई तब करते हैं जब यह आकार में छोटे होते हैं और यह पूरी तरह से अपरिपक्व हो। बेबी कॉर्न जल्दी ही परिपक्व हो जाते हैं इसीलिए किसान इन की कटाई जल्दी कर देते हैं।कटाई के बाद बेबी कॉर्न को हाथों द्वारा खेतों से चुना जाता है।बेबी कॉर्न आमतौर पर दिखने में गुलाबी, सफेद, नीले, पीले रंगो के रूप में पाए जाते हैं। बेबी कार्न खाने में बहुत ही ज्यादा मुलायम और सौम्य होते हैं।इसीलिए यह बहुत ही ज्यादा दुनिया भर में मशहूर है। प्राप्त की गई जानकारियों से या पता चला है। कि बेबी कॉर्न एशिया में बहुत ही ज्यादा खाने तथा अन्य डिशेस में इस्तेमाल किया जाता है।

बेबी कॉर्न से स्वास्थ्य को लाभ

बेबी कॉर्न खाने से स्वास्थ्य को विभिन्न विभिन्न प्रकार के लाभ होते हैं यह लाभ कुछ इस प्रकार है:

सर्वप्रथम बेबी कॉर्न में मौजूद तत्व जैसे आयरन, विटामिन बी, फोलिक एसिड की काफी अच्छी मात्रा पाई जाती है। यह सभी आवश्यक तत्व शरीर में एनीमिया की कमी को दूर करने में सहायक होते हैं। न्यूट्रिएंट से कॉर्न परिपूर्ण होते हैं। बेबी कॉर्न सेहत के लिए काफी अच्छे होते हैं। फाइबर की मात्रा बेबी कॉर्न में काफी पाई जाती है। इसमें कैलोरी काफी कम होती है, वजन को कम करने में बेबी कॉर्न बहुत ही ज्यादा सहायक होते हैं। बेबी कॉर्न रक्त शर्करा के स्तर को पूरी तरह से नियंत्रित करता है

बेबी कॉर्न उत्पादन वाले राज्य

भारत में सबसे ज्यादा बेबी कॉर्न का उत्पादन करने वाले राज्य कुछ इस प्रकार है: जैसे बिहार कर्ना. टक, राजस्थान, उत्तर प्रदेश, आंध्र प्रदेश इत्यादि राज्य है जहां बेबी कॉर्न की खेती उच्च मात्रा में होती है। बेबी कॉर्न सबसे ज्यादा राजस्थान और कर्नाटक में सर्वाधिक मात्रा में इसका उत्पादन होता है।

बेबी कॉर्न की खेती

बेबी कॉर्न की खेती करना किसानों के लिए हर प्रकार से लाभदायक होता है, किसान बेबी कॉर्न की खेती 1 वर्ष में लगभग 3 से 4 बार करते हैं। बेबी कॉर्न की खेती रबी के मौसम में की जाती है। इस खेती में लगभग 110 से 120 दिनों का समय लगता है। बेबी कॉर्न की फसल जायद के मौसम में लगभग 70 से 80 दिनों का समय लगाती है। बेबी कॉर्न की फसल खरीफ के मौसम में 55 से 65 दिनों का समय लेकर तैयार होती है। इन तीनों मौसम में किसान बेबी कॉर्न की फसल से आय का विभिन्न विभिन्न प्रकार से लाभ उठाते हैं।

बेबी कॉर्न की खेती के लिए जलवायु

बेबी कॉर्न की खेती के लिए अच्छी धूप की व्यवस्था करना बहुत ही ज्यादा उपयोगी होती हुई।अच्छी जलवायु के साथ ही साथ 22 डिग्री सेल्सियस से लेकर 28 डिग्री सेल्सियस के तापमान की आवश्यकता पड़ती है। इन तापमान के आधार पर बेबी कॉर्न की फसल का उत्पादन उच्च कोटि पर होता है।

बेबी कॉर्न की खेती के लिए मिट्टी चयन

बेबी कॉर्न की खेती करने के लिए सबसे उपयुक्त और जो अच्छी मिट्टी का चयन किया जाता है वह मिट्टी बलुई दोमट मिट्टी है। अम्लीय मिट्टी में इस फसल को उगाया जाता है। खेतों में जल निकास की व्यवस्था को बनाए रखना चाहिए।

बेबी कॉर्न की फसल के लिए खेत को तैयार करना

सबसे पहले बेबी कॉर्न की फसल को तैयार करने से लिए खेत की अच्छी तरह से जुताई करनी होती है। फसल को उगाने के लिए भूमि में लगभग 15 टन हेक्टर फार्म यार्ड खाद की आवश्यकता होती है। किसान खेत की जुताई करने के लिए डिस्क हल का इस्तेमाल करते हैं।

दो से तीन बार डिस्क हल से जुताई करने के बाद बेबी कॉर्न की खेती के लिए कल्टीवेटर द्वारा जुताई की जाती है।इस प्रक्रिया द्वारा मिट्टी को बारीक किया जाता है। ताकि बीजों का अच्छे से वातन के साथ-साथ बेहतरीन ढंग से अंकुरण हो सके। बेबी कॉर्न के मेड़ें और खांचे लगभग 45 से लेकर 25 सेंटीमीटर की दूरी पर बनाया जाता है।

बेबी कॉर्न के लिए बीज दर तथा दूरी

बेबी कॉर्न की खेती करने के लिए किसान उच्च कोटि की गुणवत्ता वाले बीज का इस्तेमाल करते हैं। फसलों के लिए किसान बीज का लगभग 20 से 25 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर भूमि में इस्तेमाल करते हैं। बेबी कॉर्न की फसल में खेतों की दूरी पौधों से लगभग 15 सेंटीमीटर की होती है। दोस्तों हम उम्मीद करते हैं, कि हमारा यह आर्टिकल बेबी कॉर्न की खेती (ठंइलब्वतद तिउपदह बवउचसमजम पदवितउंजपवद पद पिदकप) आपको पसंद आया होगा। हमारे इस आर्टिकल से आपने बेबी कॉर्न से जुड़ी सभी प्रकार की आवश्यक जानकारी प्राप्त की होगी। हमारी इस आर्टिकल को ज्यादा से ज्यादा सोशल मीडिया और अपने दोस्तों के साथ शेयर करें।

ऑफ-सीजन पालक बोने से होगा मुनाफा दुगना: शादियों के सीजन में बढी मांग

दोस्तों, आज हम पालक (चपदंबी) के विषय में जरूरी चर्चा करेंगे। पालक भी उन हरी सब्जियों में से एक हैं जो हमारे स्वास्थ्य के लिए बेहद ही आवश्यक होती है। पालक के विभिन्न फायदे लोगों में इसकी मांग को बढ़ाते हैं और यहां तक कि लोग पालक को ऑफ-सीजन में भी खाने की इच्छा रखते हैं। पालक की खेती, इसे बोने तथा पालक से होने वाले मुनाफे की पूर्ण जानकारी प्राप्त करने के लिए हमारी इस पोस्ट के अंत तक जरूर बने रहें।

पालक की खेती

सबसे पहले हम आपको पालक के विषय में कुछ जरूरी बात बताना चाहेंगे। पालक की खेती सबसे पहले ईरान में उगाई गई थी। पालक की उत्पत्ति का राज सबसे पहला ईरान को माना जाता है। उसके बाद यह भारत में अनेक राज्यों में विभिन्न विभिन्न तरह से उगाई जाती है। हरी सब्जियों में पालक सबसे गुणकारी सब्जी है। आयरन काफी मात्रा में पालक में पाया जाता है। इनके गुणकारी होने से शरीर में रक्त की मात्रा को बढ़ावा मिलता है। लोग साल भर पालक को बड़े चाव के साथ खाना पसंद करते हैं। सर्दियों के मौसम में इनको और अधिक पसंद किया जाता है। पालक की खेती कर किसान काफी अच्छे धन की प्राप्ति करते हैं।

ऑफ-सीजन में पालक की खेती

सबसे अच्छा मौसम सर्दियों का होता है पालक की खेती के लिए जो पालक सर्दियों में उगते हैं वह बहुत ही उत्तम किस्म के होते हैं। पालक के पौधे सर्दियों में गिरने वाले पाले को बिना किसी परेशानी के आसानी से सहन करने की क्षमता रखते हैं। इनका विकास भी काफी अच्छे से होता है। किसान पालक की फसल के लिए बलुई दोमट मिट्टी का उपयोग कर करते हैं। सर्दियों के मौसम में सामान्य तापमान पालक की खेती को बढ़ाता है तथा इसका उत्पादन भी होता है।

पालक की खेती के लिए मिट्टी का चयन

वैसे तो पालक के लिए औसत मिट्टी काफी होती है।अगर यह जैविक पदार्थों से भरपूर मिट्टी में उगाया जाए, तो और भी अच्छी तरह से विकसित होते हैं। किसानों के अनुसार मिट्टी का प्रकार और उसका पीएच भरी प्रकार से जांच लेना आवश्यक होता है। पालक के अच्छे विकास और उत्पत्ति के लिए उसका पीएच 6.5 से लेकर 6.8 तक पीएच होना चाहिए। रेतीली दोमट मिट्टी पालक की खेती के लिए सबसे अच्छी मानी जाती है। पौधे को रोपण करने से पहले मिट्टी को भली प्रकार से विश्लेषण करना आवश्यक होता है।

पालक की फसल के लिए खेत को तैयार

किसान पालक की अलग-अलग किस्मों को उगाने के लिए और फसलों से पालक ही अच्छी पैदावार करने के लिए मिट्टी को भली प्रकार से भुरभुरा करते हैं। पहली जुताई के दौरान खेतों को गहरा जोता जाता है और ध्यान रखने योग्य बातें इनकी पुराने बचे हुए अवशेषों को नष्ट कर दिया जाता है। खेतों को कुछ टाइम के लिए जुताई करने के बाद ऐसे ही खुला छोड़ देते हैं।

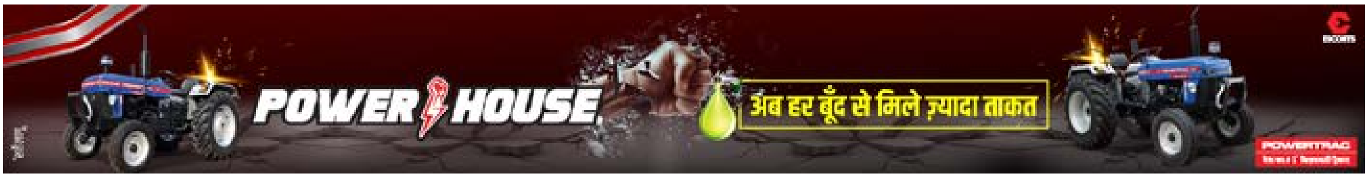

इस प्रक्रिया द्वारा मिट्टियों में भली प्रकार से धूप लग जाती है। पालक के पौधों को उवर्रक की आवश्यकता होती है क्योंकि पालक की फसल की कई बार कटाई की जाती है। पालक की फसल के लिए 15 से 17 पुरानी गोबर की खाद की आवश्यकता होती है। यहां प्रति हेक्टेयर के हिसाब से खेतों में डाला जाता है। पालक के खेत में जलभराव की समस्या से छुटकारा पाने के लिए खेतों को समतल कर दिया जाता है। भूमि में पाटा लगाकर उसे पूर्ण रुप से समतल करते है इससे जलभराव नहीं होते। किसान कुछ रसायनिक खाद का भी इस्तेमाल करते हैं जैसे: रासायनिक खाद के स्वरूप में 40 केजी फास्फोरस, 30केजी नाइट्रोजन और 40 केजी पोटाश की मात्रा इत्यादि को यह आखरी जुताई के दौरान खेतों में छिड़ककर मिट्टी में मिक्स कर दिया जाता है। पौधों को तेजी से उत्पादन करने और कटाई के लिए 20 केजी की मात्रा में यूरिया का इस्तेमाल किया जाता है खेतों में छिड़क दिया जाता है।

पालक के बीजों की रोपाई

पालक उन हरी सब्जियों में से एक है जिनको भारत के अलग-अलग क्षेत्रों में साल भर बीजों द्वारा उगाया जाता है। लेकिन किसान पालक की रोपाई करने के लिए जो सबसे अच्छा और उपयुक्त महीना मानते हैं वह सितंबर और नवंबर के बीच का है। तथा पालक के पौधे जुलाई के महीने में और भी अच्छी तरह से उगते हैं। क्योंकि इस माह में बारिश होती है जो फसल के लिए बहुत ही लाभदायक साबित होती है। पालक के बीजों का रोपण किसान छिड़काव और कुछ रोपण विधि द्वारा करते हैं। इन बीजों को लगभग 2 से 3 घंटे गोमूत्र में भिगोकर रखा जाता है। बीजों को अच्छी तरह से अंकुरित होने के लिए इनका रोपण लगभग 2 से 3 सेंटीमीटर की दूरी पर किया जाता है।

पालक के पौधों की सिंचाई

पालक के बीजों की रोपाई करने के बाद भूमि को भली प्रकार से गीला रहना बहुत ही ज्यादा आवश्यक होता है। क्योंकि पौधों की अच्छी उत्पादकता प्राप्त करने के लिए अच्छी सिंचाई की आवश्यकता होती है।

भूमि में बीज रोपण करने के बाद पानी देने की प्रक्रिया को आरंभ कर देना चाहिए। किसान पालक की फसल में लगभग 5 से 7 दिन के बाद सिंचाई करते हैं। इन सिंचाई से अंकुरण अच्छे से होता है। तथा वर्षा ऋतु के मौसम में जब जरूरत दिखाई दे तभी खेतों में पानी दे। दोस्तों हम उम्मीद करते हैं हमारा यह आर्टिकल पालक की बढ़ती मांग, ऑफ-सीजन पालक बोने, सर्दियों के सीजन में पालक की बुवाई तथा पालक से होने वाले मुनाफे इत्यादि की जानकारी हमारे इस आर्टिकल में मौजूद है। जो आपके बहुत काम आएगी हम यह आशा करते हैं कि हमारे इस आर्टिकल को आप ज्यादा से ज्यादा सोशल मीडिया और अपने दोस्तों के साथ शेयर करें।

पुदीने की खेती

दोस्तों आज हम बात करेंगे, पुदीना के विषय में, पुदीना जिसके बिना खाने का स्वाद अधूरा है और पुदीना जिस की मौजूदगी से खाने का स्वाद और खुशबू, दोनों में तरो ताजगी और खुशबू पड़ जाती है, वो पुदीना कहलाता है। पुदीने को इंग्लिश में मिंट भी कहते हैं। पुदीने को किस प्रकार से रोपण किया जाता है और पुदीने की कटाई किसान किस प्रकार करते हैं, इस पुदीने की खेती के विषय की पूर्ण जानकारी प्राप्त करने के लिए हमारे इस पोस्ट के अंत तक जरूर बने रहे।

पुदीना

पुदीना एक जड़ी बूटी के रूप में जाना जाता है, पुदीना को वैज्ञानिक दृष्टि में मेंथा के नाम से भी जाना जाता है। पुदीना विभिन्न विभिन्न प्रकार के व्यंजनों के स्वाद को बढ़ाता है उन्हें खुशबूदार और स्वादिष्ट बनाता है। पुदीने का उपयोग विभिन्न विभिन्न प्रकार से किया जाता है जैसे: माउथ फ्रेशनर के रूप में, टूथपेस्ट के स्वाद को बढ़ाने के लिए, फ्लेवरिंग, खाने, सलाद इत्यादि में पुदीने का इस्तेमाल किया जाता है। पुदीना न सिर्फ खाने का स्वाद बढ़ाता है, बल्कि पुदीना औषधि रूप में सेहत को भी संवारता है।

पुदीने के प्रकार

भारत देश में सबसे ज्यादा पुदीना उगाए जाने वाली चार प्रकार की फसलें है जो इस प्रकार है :

जापानी टकसालधमेन्थॉल टकसाल और पुदीना। पुदीना, बर्गमोट टकसाल हैं, सबसे ज्यादा आय का साधन बनाए रखती है वह जापानी टकसालधमेन्थॉल टकसाल पुदीने की फसल है।

पुदीने की खेती

पुदीने की खेती के लिए उत्तम जलवायु का होना बहुत ही ज्यादा आवश्यक होता है और पुदीने की खेती के लिए सबसे ज्यादा उपयोगी जलवायु समशीतोष्ण और उष्ण एवं उपोषण जलवायु होती है। पुदीने की खेती किसान साल भर आराम से कर सकते हैं। पुदीने की खेती उगाने के लिए अच्छी गहरी उपजाऊ मिट्टी की बहुत आवश्यकता होती है। भूमि की जल धारण की क्षमता अच्छी होनी चाहिए। ताकि उस में फसल अच्छे से उगाए जा सके हैं तथा पुदीने की फसल को आप जमाव वाली मिट्टी में भी बुवाई कर सकते हैं।

TRACTOR Bird

पुदीने की खेती के लिए मिट्टी का चयन:

पुदीने की खेती के लिए आप अलग दृ अलग तरह की मिट्टी का इस्तेमाल कर सकते हैं ,परंतु सबसे अच्छी मिट्टी दोमट मिट्टी, रेतीली दोमट मिट्टी, तथा कार्बनिक पदार्थो से परिपूर्ण गहरी मिट्टी इसकी खेती करने के लिए बहुत ही उचित होती है। पुदीने की अच्छी फसल के लिए मिट्टियों का सूखा और ढीला होना आवश्यक होता है। तथा पुदीने की फसल को अच्छा रखने के लिए पानी ठहराव से बचे। फसल की अच्छी तरह से जांच करते रहना चाहिए, ताकि पानी बिल्कुल भी न ठहरे, लाल और काली दोनों ही मिट्टियों में पुदीने की फसल की खेती कर सकते हैं।

पुदीने के लिए खेत की तैयारी:

पुदीने की खेती के लिए भूमि की अच्छी तैयारी करने की बहुत ही आवश्यकता होती है। सर्वप्रथम पुदीने की खेती के लिए पहली गहरी जुताई की आवश्यकता होती है, तथा जुताइयां हैरो से करना खेत के लिए उपयोगी होता है।

आखिरी जुताई के लिए करीबन 20 से 25 टन प्रति हेक्टेयर के रूप से उच्च कोटि की सड़ी हुई गोबर की खाद को खेत में मिलाना अनिवार्य होता है तथा पाटा लगाकर खेत को पूरी तरह से समतल करना उपयोगी होता है।

पुदीने की खेती में रोपण:

किसान पुदीने की खेती रोपण करने का समय मानसून का चुनते हैं, इस मौसम के शुरू में ही उत्तरी भारत में जापानी पुदीने की बुवाई करना शुरू कर देते हैं फरवरी के शुरुआती सप्ताह के बीच में तथा मार्च के दूसरे सप्ताह तक बुवाई करना उपयोगी होता है।

पुदीने की खेती रोपण विधि जानिए:

पुदीने की खेती करने से पहले कसक को लगभग 10 से 14 सेंटीमीटर लंबाई के बीच पुदीना रोपण के लिए काट लें । प्रति हेक्टेयर भूमि को कम से कम 450 से 500 किलोमीटर की दूरी पर कसक की जरूरत पड़ती है।

पुदीने की खेती के लिए गहराई लगभग 2 से 3 सेंटी मीटर गहरी होनी चाहिए, पुदीना रोपण करने के लिए जड़ वाला भाग खेत में रोपण करना चाहिए इस प्रकार पुदीने की बुवाई करनी चाहिए।

पुदीने की खेती में सिंचाई की आवश्यकता:

पुदीने की खेती के लिए अच्छी सिंचाई की आवश्यकता होती हैं, और फसल में नमी की अच्छी मात्रा होना आवश्यक होता है। पुदीने की सिंचाई लगभग 10 से 12 दिन के अंतराल पर करनी चाहिए वो भी ग्रीष्म ऋतु काल के दौरान, यदि मौसम पतझड़ का हो तो इसकी पांच से छह सिंचाई करना आवश्यक होता है। सिंचाई के साथ ही साथ बरसात के मौसम में पानी के ठहराव से बचे तथा जल निकास का मार्ग भी बनाएं, ताकि खेतों को आवश्यकतानुसार सिंचाई की प्राप्ति हो।

पुदीने के पौधों की कटाई:

पुदीने की फसल किसानों के लिए बहुत ही लाभदायक फसलों में से एक है ,क्योंकि पुदीने की खेती में साल में दो से तीन बार इनकी कटाई कर सकते हैं और इस आधार पर किसान अच्छे आय निर्यात का साधन भी बनाए रखते हैं। किसान पुदीने की खेती की कटाई बरसात के शुरुआती मौसमों में मई और जून के महीने में करते हैं। वही पुदीने की दूसरी फसल की कटाई सितंबर और अक्टूबर तथा मानसून के बाद करते हैं। सबसे आखिरी और तीसरी कटाई किसान पुदीने की फसल की नवंबर और दिसंबर के महीने में करते।

पुदीना के पौधे की देखभाल:

पुदीने के पौधों के लिए धूप बहुत ही ज्यादा महत्वपूर्ण होती है, लेकिन अत्यधिक धूप मिलने से पौधे खराब भी हो सकते है। इसीलिए निश्चित रूप से पौधों को दिन में तेज धूप से बजाएं। तेज धूप से पौधे खराब ना हो इसके लिए विभिन्न प्रकार से छाया की व्यवस्था करनी चाहिए। नियमित रूप से धूप प्राप्ति के बाद पौधों को धूप के हानिकारक प्रभाव से बचाने के लिए छाया का इस्तेमाल करें।

पुदीने के पौधे में लगने वाले रोग:

कृषि विशेषज्ञों द्वारा प्राप्त जानकारियों के अनुसार ज्यादा नमी के कारण पुदीने की फसल खराब भी हो सकती है तथा पुदीने में विभिन्न प्रकार के कीट रोग भी लग सकते हैं जैसेरू सुंडी जालीदार कीट तथा रोएंदार सुंडी इत्यादि। सबसे ज्यादा नुकसान फसल को रोएंदार सुंडी द्वारा होता है। क्योंकि यह हरे पुदीने की पत्तियों को खाकर उन्हें पूरी तरह से जालीदार कागज की तरह बनाकर, उन्हें हानि पहुंचाते हैं इस प्रकार इन रोएंदार सुंडी द्वारा फसल को भारी नुकसान होता है। दोस्तों हम उम्मीद करते हैं आपको हमारा यह आर्टिकल मिंट या पुदीना का रोपण, कटाई पसंद आया होगा और आप इस आर्टिकल के द्वारा सभी प्रकार की जानकारियां जो पुदीने के पौधों से जुड़ी हुई है हमारे इस आर्टिकल के जरिए प्राप्त कर सकते हैं।

धनिया का उपयोग

भारत में धनिया रसोई घर में एक मुख्य भूमिका निभाती है, क्योंकि धनिया का उपयोग विभिन्न विभिन्न प्रकार से किया जाता है। धनिया का उपयोग सिर्फ खाने में ही नहीं, बल्कि चाट, सलाद ,सब्जियों को ऊपर से सजाने तथा विभिन्न विभिन्न तरह से धनिया का इस्तेमाल किया जाता है। इसीलिए भारतीय रसोइयों में धनिया का अपना एक मुख्य स्थान है। जो कोई और नहीं ले सकता हैं। यह अपनी खुशबू के साथ विभिन्न प्रकार के गुणों को भी अपने अंदर समेटे हुए रहती है। जानिए धनिया का उपयोग और महत्व ।

धनिया का उपयोग एवं महत्व:

भारत देश मसालों की भूमि के लिए प्रसिद्ध है और यह प्राचीन काल से सुनिश्चित है।धनिया की पत्तियां और बीज खाने को खुशबूदार और जैकेदार बनाते हैं। धनिया की पत्तियां खाने में खुशबू और इनके बीज में विभिन्न प्रकार के औषधि गुण होते हैं। जिसको खाने से हमारे शरीर को लाभ पहुंचता है।धनिया के औषधि गुणों का उपयोग कुलिनरी,डायरेटिक, कार्मिनेटीव इत्यादि में किया जाता है।

धनिया उत्पादक करने वाले मुख्य क्षेत्र कुछ इस प्रकार है जैसे: राजगढ़ ,विदिशा ,शाजापुर छिंदवाड़ा,मंदसौर, म.प्र के गुना आदि। प्राप्त की गई जानकारियों के अनुसार मध्य प्रदेश में सबसे ज्यादा धनिया की खेती की जाती है। मध्यप्रदेश में धनिया की खेती करीबन 1,16,607 की दर पर होती है। इन खेती के आधार पर 1,84,702 टन धनिया की उत्पादकता की प्राप्ति की जाती है।

धनिया की फसल के लिए उपयुक्त जलवायु:

धनिया की फसल के लिए सबसे अच्छा मौसम ठंडी का होता है। ठंडी और शुष्क मौसम धनिया की उत्पादकता को बढ़ाता है। धनिया की फसल के लिए सबसे अच्छा तापमान 25 डिग्री से 26 डिग्री सेल्सियस का माना जाता है।किसानों के अनुसार धनिया की फसल शीतोष्ण जलवायु की फसल होती है। धनिया की फसल फूल और दाना का रूप प्राप्त करने के लिए पाला रहित मौसमो पर निर्भर होती हैं। ज्यादा पाला धनिया की फसल को खराब कर देता है।

धनिया की फसल के लिए सिंचाई:

धनिया की फसल के लिए सबसे उपयोगी दोमट मिट्टी होती है। खेतों में जल निकास की अच्छी व्यवस्था करना बहुत ही जरूरी होता है। क्षारीय और लवणी भूमि को धनिया की फसल सहन नहीं कर पाती, धनिया की फसल दोमट मिट्टी और मटियार दोमट मे बहुत अच्छी तरह उत्पादन करती हैं।धनिया की फसल के लिए मिट्टी का पीएच मान लगभग 6 पॉइंट 5 से लेकर 7 पॉइंट 5 तक का होना जरूरी होता है। धनिया की फसल के लिए सिंचाई पर ध्यान देना जरूरी है। यदि पानी की व्यवस्था ना हो तो आप भूमि में पलेवा देकर भूमि को उचित रूप से तैयार कर सकते हैं। इस प्रकार जुताई करने से भूमि में मिट्टी के ढेले नहीं बनते हैं।

धनिया बोने का उचित समय:

धनिया की बुवाई का उचित समय रबी का मौसम होता हैं। अक्टूबर से लेकर नवंबर तक धनिया बोने का सबसे उचित समय होता है। धनिया के पत्तों की अच्छी प्राप्ति के लिए फसल बोने का सही समय अक्टूबर से लेकर दिसंबर तक का बहुत ही उपयुक्त माना जाता है।पाले के खतरे से बचने के लिए धनिया को नवंबर के दूसरे सप्ताह में बोना आवश्यक होता है।

धनिया की फसल में खाद और उर्वरक:

खेत को तैयार करते समय किसान भाई प्रति हेक्टेयर क्षेत्र में 100 से लेकर 150 कुंटल सड़ी हुई गोबर की खाद का इस्तेमाल करते हैं। तथा 80 किलोग्राम नत्रजन और 50 किलोग्राम फास्फोरस तथा 50 किलोग्राम पोटाश की मात्रा का इस्तेमाल करते हैं। इन खादो को भली प्रकार से मिट्टी में मिलाया जाता है।

धनिया में सल्फर कब डालते हैं?

फसलों में सल्फर डालने का सही समय शाम का होता है। सल्फर को कुछ इस प्रकार से खेतों में डाला जाता है जैसे य1 लीटर सल्फर को 1000 लीटर पानी में अच्छी तरह से मिलाकर फसलों पर छिड़काव करें। छिड़काव करते समय इस बात का ध्यान रखें। कि कोई जगह बचे नहीं खेतों में पूर्ण रूप से छिड़काव हो जाए।

धनिया पीली क्यों पड़ जाती है?

धनिया की फसल की देरी से कटाई करने की वजह से धनिया में पीलापन आ जाता है। जो किसान भाइयों के हित में अच्छा साबित नहीं होता। इसीलिए धनिया की फसल की कटाई इसके सही समय पर करनी चाहिए। जब धनिया का दाना दबाने पर धनिया मे हल्का कठोर पन और पत्तिया पीली पड़ने लगे, धनिया डोडी दिखने में चमकीले भोरे तथा हरा रंग ,पीला होने पर और दानों में लगभग 18ः नमी मौजूद रहे तभी कटाई करनी चाहिए। कटाई में की गई जरा सी भी देरी धनिया के रंगों को पूरी तरह से खराब कर देती है।

धनिया के लाभ:

धनिया खाने से हमें विभिन्न विभिन्न प्रकार के लाभ होते हैं। क्योंकि धनिया खाने से विभिन्न प्रकार के रोग नष्ट हो जाते हैं तथा हमें उन रोगो से छुटकारा भी मिल जाता है। जैसे रू धनिया खाने से हमारी पाचन शक्ति अच्छी रहती है, हमारे शरीर का कोलेस्ट्रॉल लेवल मेंटेन रहता है तथा डायबिटीज, किडनी आदि रोगों में भी यह काफी सहायक होती है। धनिया में मौजूद विभिन्न प्रकार के गुण जैसे फाइबर, कार्बोहाइड्रेट, वसा प्रोटीन, मिनरल आदि मौजूद होते हैं। यह सभी आवश्यक तत्व धनिया को और भी ज्यादा महत्वपूर्ण बनाते हैं। दोस्तों हम यह उम्मीद करते हैं, कि हमारा यह धनिया का आर्टिकल आपको पसंद आया होगा। हमारे इस आर्टिकल में धनिया से जुड़ी सभी प्रकार की जानकारियां मौजूद है। कृपया हमारे इस आर्टिकल को ज्यादा से ज्यादा अपने दोस्तों के साथ सोशल मीडिया पर शेयर करें।

गाय भैंसों की देखभाल गर्मी के दिनों में कैसे करें

आज हम बात करेंगे, कि बेहद गर्मियों के मौसम में गाय और भैंसों की देखभाल किस तरह से करनी चाहिए। ताकि उनको गर्मी के मौसम में किसी भी तरह का कोई नुकसान ना हो सके और वह किसी भी प्रकार से रोग ग्रस्त ना हो।

गाय भैंसों की देखभाल गर्मियों के मौसम में

पशुपालन के लिए गर्मी का मौसम बहुत ही नुकसानदायक होता है क्योंकि गर्मियों के मौसम में पशुओं की देखभाल करना बेहद मुश्किल हो जाता है। ऐसे में पशुपालन अपनी कमर कस लेते हैं और अपने पशुओं जैसे: गाय-भैंसों की देखभाल की स्थिति को बनाए रखने के लिए विभिन्न प्रकार के प्रयास करते हैं ताकि वह गाय-भैंसों को इस भीषण गर्मी के तापमान से बचा सके। गर्मियों के मौसम में वातावरण का तापमान लगभग 42 – 48 °C सेल्सियस तक पहुंच जाता है कभी-कभी और ज्यादा भी हो सकता है। जिसके चलते गर्मी में पशुपालन करते समय पशुओं की विशेष रूप से देखभाल की जरुरत होती है।तापमान के इस दबाव के चलते पशुओं की पाचन प्रणाली तथा दूध उत्पादन में भी काफी बुरा प्रभाव पड़ता है। जब यह पशु नवजात शिशु को जन्म देते हैं, और इस गर्मी के मौसम में उनकी जरा भी देखभाल में की गई कमी उनकी जान के लिए घातक साबित हो सकती है।थोड़ी भी लापरवाही नवजात शिशुओं की जान पर बन आती है।

गर्मियों के मौसम में पशुओं की स्वास्थ्य की देखभाल

गर्मियों के मौसम में किसी भी स्थिति में पशुओं के स्वास्थ्य के साथ की गई लापरवाही।उनके स्वास्थ्य पर काफी हानिकारक प्रभाव डालती है। जि. सके चलते पशु पालन करने वालो का निर्यात का साधन भी बंद हो सकता है ऐसे में पशुपालन को चाहिए कि अपना निर्यात का साधन बनाए रखने के लिए पशुओं की खास देखभाल करें।पशुओं की खास देखभाल करने के लिए निम्न बातों का पूर्ण रुप से ध्यान रखे:

- सर्वप्रथम पशु पालन करने वाले भाइयों को हरा चारा अधिक से अधिक गर्मियों के मौसम में गाय और भैंसों को देना चाहिए। क्योंकि गाय और भैंस इन हरे चारों को बहुत ही चाव से खाते हैं , हरे चारे में मौजूद 70 से 90: जल की पूर्ण मात्रा होती है जिससे पशुओं के शरीर में जल की पूर्ति होती है।
- गर्मियों के मौसम में गाय भैंस और अन्य पशुओं को भूख कम लगती हैं अथवा प्यास ज्यादा लगती हैं। ऐसी स्थिति में पशुपालन को दिन में कम से कम 3 बार स्वच्छ और साफ सुथरा पानी गाय ,भैंसों को देना चाहिए। जिसे पीकर उनके शरीर का तापमान पूर्ण रूप से नियंत्रण में रहता है, कृषि वैज्ञानिकों के अनुसार पानी में थोड़ा सा आटा व नमक मिलाकर पिलाना पशुओं के लिए उपयोगी होता है।शुष्क मौसम के लिए ऐसा करना लाभदायक होता है तथा शरीर में पानी की कमी को पूरा करता है।
- पशुपालन गर्मियों के दिनों में अपने पशुओं को चारे में एमिनो पाउडर तथा ग्रो बी-प्लेक्स का मिश्रण देते हैं जो पशुओं के लिए बहुत ही उपयोगी होता है।
- बढ़ती गर्मी के कारण पशुओं को भूख कम लगना शुरू हो जाती है ऐसी स्थिति में पशुपालन उनको ग्रोलिव फोर्ट (ळतवू सपअम थ्वतजम) देते हैं। जिसे खाकर उनके शरीर में भोजन का पूर्ण निर्यात हो सके। गर्मियों के प्रभाव से पशुओं की पाचन प्रणाली पर काफी बुरा असर पड़ता है। ऐसे में ग्रोलिव फोर्ट पशुओं में खुराक की मात्रा को बढ़ाता है।
- पशुओं से दूध प्राप्त करने के बाद उन्हें हो सके, तो ठंडा पानी पिलाएं ऐसा करने से उनके शरीर में ठंडक पहुंचेगी। तीन से चार बार पशुओं को ताजा ठंडा पानी पिलाना बहुत ही जरूरी है प्रतिदिन गर्मियों के मौसम में पशुपालन को अपने पशुओं को ठंडे पानी से स्नान कराना चाहिए।पशुपालन भैंसों को तीन से चार बार गर्मियों के दिनों मे स्नान कराते हैं तथा गायों को दो बार नहलाते हैं।
- गर्मियों के मौसम में गाय भैंस आदि पशुओं को खाद पदार्थ जैसे रोटी, आटा ,चावल आदि पशुओं को नहीं खिलाना चाहिए।यह कार्बोहाइड्रेट की अधिकता वाले खाद्य पदार्थ हैं।पशुओं को संतुलित आहार के रूप में चारे तथा दाना जिसकी मात्रा 40 और 60 के बीच की हो आहार के रूप में दें।
- आने वाली बरसात से पशुओं को बचाने के लिए उनका टीकाकरण जरूर कराएं। टीकाकरण कराने से पशु कई प्रकार की बीमारियां जैसे गलाघोंटू , खुरपका मुंहपका , लंगड़ी बुखार आदि से खुद का बचाव कर सकेंगे। समय-समय पर गाय भैंस पशुओं को एलेक्ट्रल एनर्जी की भी आवश्यकता होती है। ऐसे में इन को समय-समय पर आपको एलेक्ट्रल एनर्जी एनर्जी देनी होगी

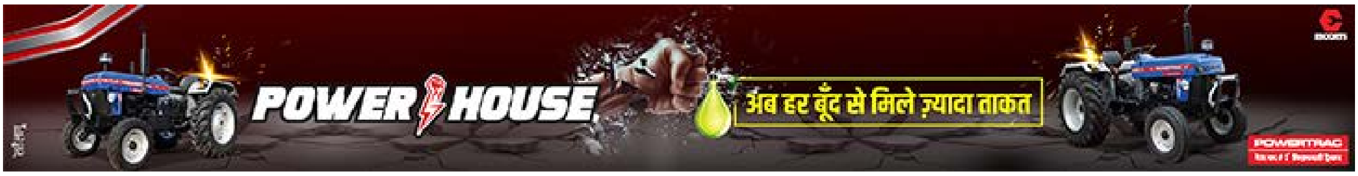

गर्मियों के दिनों में पशु आवास की व्यवस्था

- गर्मियों के दिनों में गाय और भैंसों के लिए उचित आवास व्यवस्था करनी चाहिए , क्योंकि गर्मियों के दिनों में तापमान तेज होने के कारण भूमि पूरी तरह से गर्म रहती है जिसके चलते उनके शरीर पर काफी बुरा प्रभाव पड़ सकता है। ऐसे में आपको कुछ सावधानी बरतनी चाहिए यह सावधानियां कुछ इस प्रकार
- सर्वप्रथम गर्मियों के दिनों में गाय और भैंसों को हमेशा पेड़ की छांव के नीचे बांधना चाहिए जिससे उनका धूप से बचाव हो सके।
- जिस भी जगह पर आप अपने पशुओं को बांधे उसकी छत पर आपको सूखी घास या फिर आपको कडबी रखनी चाहिए। ऐसा करने से छत को गर्म होने से पूरी तरह से रोका जा सकता है और छत का तापमान ठंडा रहेगा। पशुपालकों को पशुओं के आवास के लिए अपने पक्के मकानों में इस तरह की व्यवस्था करनी चाहिए।
- जरूरत से ज्यादा आपको पशुओं को बांधकर नहीं रखना है। जैसे ही शाम होने लगे आपको पशुओं को चरने के लिए छोड़ देना है और जहां भी पशु आवास करते हैं। उन जगहों पर बोरे की छाल लगा देनी चाहिए जिससे कि ताजी और ठंडी हवा उन तक पहुंच सके।
- यदि पशुपालन करने वाले पशुओं को छायादार वृक्षों के नजदीक पशुशाला का निर्माण करते हैं। तो इससे पशुओं का तापमान संतुलित बनाए रखने में सहायता मिलती हैं।
- इन आसान तरीकों को अपनाकर नवजात पशु तथा गाय-भैंसों वह दुधारू पशुओं की उच्च ढंग से देखभाल की जा सकती है। तथा इन उपायों के अनुसार गर्मियों के भयानक प्रकोप से पशुओं का बचाया किया जा सकता है और उनसे विभिन्न प्रकार के उत्पादन की भी प्राप्ति की जा सकती है।

भूमि विकास, जुताई और बीज बोने की तैयारी के लिए उपकरण

आइए जानते हैं कि भूमि का विकास किस तरह से किया जाता हैं और भूमि विकास पूर्ण हो जाने के जुताई और बीज बोने के क्या तरीके हैं। जुताई और बीज बोने की पूर्ण जानकारी प्राप्त करने के लिए हमारी पोस्ट के अंत तक जरूर बने रहें। आइये जानें भूमि विकास, जुताई और बीज बोने की तैयारी के लिए उपकरण और आधुनिक कृषि यंत्र।

बीज बोने के तरीके

बुवाई का क्या अर्थ होता है, मिट्टी की विशेष गहराई को प्राप्त करने के बाद अच्छे अंकुरण बीजों को बोने की क्रिया को बुवाई कहते हैं। कृषि क्षेत्र में बुवाई का अपना एक महत्वपूर्ण स्थान है। बीच होने से पहले भूमि को अच्छी तरह से समतल किया जाता है।ताकि बीज बोने के टाइम जमीन उथल-पुथल या उसके कण भूमि में ना रह जाए।भूमि में बीज डालने के बाद बीज की दूरी को ध्यान में रखना आवश्यक होता है इससे अंकुरण अच्छे से फूट सके।

भूमि विकास के लिए भूमि की जुताई

किसी भी फसल की बुआई के लिए जुताई सबसे पहला कदम होती है। मिट्टी को उल्टा पुल्टा कर थोड़ा ढीला करा जाता है।जिससे पौधों और पोषक तत्वों की उपलब्धता को सुनिश्चित किया जा सके। जुताई के द्वारा रोपाई में बहुत ही मदद मिलती है और अंकुरण आसानी से भूमि में प्रवेश कर लेते हैं।मिट्टी ढीला करने से सबसे बड़ा फायदा यह होता है।कि मिट्टी को ढीला करने से इनमें मौजूद रोगाणुओं और केंचुओं के विकास में बहुत ही आसानी होती है।जिससे फसलों को उच्च कोटि का लाभ पहुंचता है। साथ ही साथ यह जुताई खरपतवार आदि में भी काफी सहायता देती है।जुताई के द्वारा मिट्टी पोषक तत्वों से पूरी तरह से भरपूर बनाई जाती है। सभी किसान, कृषि फसलों की बुवाई करने से पहले खेत की अच्छी तरह से जुताई करना अनिवार्य समझते हैं।कभी-कभी जुताई फसलों के आधार पर भी की जाती है। की फसल किस तरह की है ,और उसे कितने तरह की जताई की जरूरत है किन स्थितियों में। किसान अपनी भूमि की जुताई के लिए कल्टीवेटर , कुदाल, हल आदि उपकरणों का प्रयोग करते हैं। कभी-कभी मिट्टी काफी कठोर हो जाती है और फसलों की जुताई करने के लिए हैरो का इस्तेमाल भी किया जाता है। जिसके बाद जुताई के बाद भी कई प्रकार के जुताई की जाती है।

बुवाई के लिए भूमि को समतल करना

किसान खेतों की जुताई के बाद जो दूसरी क्रिया करते हैं वह भूमि समतल है। समतल यानी भूमि को एक समान करना होता है हल यह किसी भी अन्य उपकरणों के द्वारा। भूमि समतल विभिन्न विभिन्न समय पर फसलों के आधार पर बदलता रहता है। किसान समतल के लिए खेतों में मेड, खांचे या अन्य प्रकार की क्रिया को शामिल किए रहते हैं। जो विशिष्ट फसलों के लिए बहुत ही आवश्यक होती हैं। भूमि समतल करने से फसलों में सिंचाई काफी आसानी से हो जाती हैं। पौधों को अच्छी तरह से पानी की प्राप्ति हो जाती है पौधों के पनपने और पूर्ण रूप से उत्पादन करने के लिए।

भूमि समतल करने के लिए सबसे महत्वपूर्ण उपकरण यानी लेवलर का इस्तेमाल किया जाता है। लेवलर उपकरण का इस्तेमाल कर भूमि को समतल किया जाता है।

खाद का चयन करना

बुवाई के बाद खाद के रूप में गाय की गोबर, नीम के अर्क, केंचुआ सिंथेटिक उर्वरकों आदि जैसे जैविक संशोधनों का उपयोग किया जाता है। खेतों में मिट्टी की खाद डालने से पहले उसका अच्छी प्रकार से परीक्षण कर लेना चाहिए ,ताकि किसी भी प्रकार से फसलों को हानि ना हो, और मिट्टियों में मौजूद पोषक तत्व और खनिजों की उचित मात्रा की उपलब्धता पूर्ण रूप से सुनिश्चित हो। कुछ प्राकृतिक संशोधन के बाद हमें मिट्टी में खाद मिलानी चाहिए।

बीज बोने के एक प्रसारण तरीके

किसान भाई आसान तरीके से बीज बोने का प्रसारण करते हैं। खेतों में बीजों को बेहतरीन ढंग से तैयार कर लिया जाता है और अपने हाथों से भूमि पर बीजों को फेंकना शुरू कर दिया जाता हैं। आप हाथ या किसी अन्य उपकरण के द्वारा भी बीज को खेतों में फेंक सकते हैं। बीज बोने से पहले बीजों का अच्छे से चयन कर लेना चाहिए। कि बीज भूमि के लिए उचित है या नहीं।बीजो को अच्छी तरह से खेतों में बिखेर देना चाहिए।

बीज बोने के लिए डिब्लिंग का इस्तेमाल

खेतों में आसानी से बीज बोने के लिए आजकल किसान भाई डिब्लिंग का भी इस्तेमाल कर रहे हैं। इस उपकरण के जरिए बीजों को डिब्बलर में रखा जाता है। डिब्बलर के निचले हिस्से पर एक छेद होता है जो बीज रखने के लिए उपयोग किया जाता है। डिब्बलरों को कोई भी कुशल किसान या श्रमिक आसानी से इस्तेमाल कर सकते हैं। यह एक शंक्वाकार कहने वाला यंत्र है। यह खेतों के बीच, बीज बोने के लिए खेतों में छेद करता है और अंकुरित बीजों को विकसित करता है।डिब्लिंग विधि का इस्तेमाल कर समय की काफी बचत होती है। डिब्लिंग विधि का इस्तेमाल किसान ज्यादातर सब्जियों की फसल बोने तथा अन्य फसलों के लिए ज्यादा इस्तेमाल किया जाता हैं।

बीज बोने के लिए उपकरण

किसान बीज बोने के लिए अपना आसान और पारंपरिक तरीके का इस्तेमाल करते हैं,जैसे कि अपने हल के पीछे बीजों को गिराते रहते हैं भूमियों पर या आसान हल उपकरण का इस्तेमाल हैं बीज बोने के लिए। इनका उपयोग ज्यादातर गेहूं, चना ,मक्का जौ आदि बीजों की बुवाई करने के लिए किया जाता है। इस प्रक्रिया में किसान भूमि को हल द्वारा गहराई करता है ,और उसके पीछे दूसरा व्यक्ति बीजों को खेतों डालता रहता है। इस क्रिया से समय की बहुत हानि होती है।

भूमि विकास के लिए पशु चालित पटेला हैरो उपकरण का इस्तेमाल

पशु चालित पटेला हैरो की लंबाई लगभग 1.50 मीटर और मोटाई कम से कम 10 सेंटीमीटर होती है।पशु चालित पटेला हैरो लकड़ी का बना हुआ उपकरण होता है। इस उपकरण से किसानों को बहुत ही सहायता मिलती है ,क्योंकि इसकी ऊपरी सतह पर घुमावदार हुक बंधा रहता है जो मिट्टियों को उपर नीचे करने में सहायक होता है। तथा इस उपकरण के जरिए मिट्टी में भुरभुरा पन आ जाता है।इसका मुख्य कार्य फसल के ठूठ, वह इक्कट्ठ करना और खरपतवार को मिट्टी से अलग करना होता है। पटेला 30 किसानों का कार्य करता है, इसके द्वारा 58 प्रतिशत संचालन में लगने वाले खर्चो की बचत होती है। तथा भूमि उपज में 3 से 4: की बढ़ोतरी होती है।

ब्लेड हैरो उपकरण का इस्तेमाल

या उपकरण स्टील का बना हुआ होता हैं, इसका मुख्य कार्य खरपतवार निकालने के लिए होता है। इस उपकरण में लगे ब्लेड के जरिए खरपतवार आसानी से निकाले जाते हैं। तथा इस उपकरण में लोहे के बड़े बड़े कांटे भी लगे होते।

इस यंत्र को चलाने के लिए हरिस वह हत्था लगा हुआ होता है। यह यंत्र पूर्ण रूप से स्टील का बना हुआ होता है। इस उपकरण की मदद से किसान मूंगफली आलू आदि फसल की खुदाई भी कर सकते हैं। इस यंत्र के द्वारा किसानों को कम से कम 24 मजदूरों की बचत होती हैं और 15: जो खर्च संचालन में लगता है उसकी भी बचत होती है। 3 से 4: फसल उपजाऊ में काफी बढ़ोतरी भी होती है।

ट्रैक्टर चालित मिटटी पलट हल का इस्तेमाल

ट्रैक्टर चालित मिटटी पलट हल स्टील का बना हुआ होता है। इसका जो भाग होता है वो फार,मोल्ड बोर्ड, हरिस , भूमि पार्श्व वह (लैंड साइड), हल मूल (फ्राग) आदि का होता है। इस उपकरण की सहायता से मिट्टी जितने भी सख्त हो, उसको तोड़ा जा सकता है। यह हल सख्त से सख्त मिट्टी को तोड़ने में सक्षम हैं। यह हल कम से कम 40 से लेकर 50: मजदूरों का काम अकेले करता है। इसकी सहायता से 30: संचालन का खर्चा बचता है। इस हल की सहायता से किसानों को कम से कम 4 से 5: की उच्च कोटि की खेती की प्राप्ति होती है। यह हल की जुताई की गहराई का नियंत्रण लगभग हाइड्रोलिक लीवर या ट्रैक्टर के थ्री प्वाइन्ट लिंकेज से किया जाता हैं। हम उम्मीद करते हैं कि आपको हमारी इस पोस्ट के जरिए भूमि विकास, जुताई और बीज बोने की तैयारी के लिए उपकरण व अन्य उपकरणों की पूर्ण जानकारी प्राप्त हुई होगी। यदि आप हमारी दी गई जानकारियों से संतुष्ट है ,तो हमारी इस पोस्ट को अपने सोशल मीडिया यह अन्य प्लेस पर शेयर करें अपने दोस्तों के साथ धन्यवाद।

सोनालिका ट्रैक्टर्स ने 43-5% की घरेलू वृद्धि दर्ज की

सोनालिका ने 43-5% की घरेलू वृद्धि दर्ज की और 10,217 ट्रैक्टरों की अप्रैल की घरेलू बिक्री में सबसे अधिक वृद्धि दर्ज की और उद्योग की वृद्धि (अनुमानित 41%) को पीछे छोड़ दिया।

FY*22 में नए शिखर प्राप्त करने के बाद, सोनालिका ट्रैक्टर्स ने मजबूत गति को आगे बढ़ाया है और एक मजबूत प्रदर्शन के साथ थ्ल'23 की अपनी यात्रा शुरू की है। कंपनी ने अप्रैल महीने में अब तक की सबसे अधिक 12,328 ट्रैक्टरों की बिक्री दर्ज की है, जो अप्रैल में 43.5% की सर्वकालिक वृद्धि और उद्योग के विकास (अनुमानित 41%) को पीछे छोड़ते हुए संचालित है। सोनालिका कई उत्पाद लॉन्च के साथ नए वित्तीय वर्ष के लिए पूरी तरह तैयार है और किसानों की खुशी के लिए बेहतर सेवाएं प्रदान करने के लिए प्रतिबद्ध है।

नई दिल्ली, 2 मई'22: ट्रैक्टर बिक्री और उत्पादन दोनों में वित्त वर्ष 22 में अपने रिकॉर्ड प्रदर्शन के बाद, भारत का नंबर 1 ट्रैक्टर निर्यात ब्रांड सोनालिका अब वित्त वर्ष 23 में तूफान से बाजार में उतरने के लिए तैयार है। सोनालिका ट्रैक्टर्स ने अप्रैल महीने में 12,328 इकाइयों की कुल ट्रैक्टर बिक्री दर्ज की है। यह अप्रैल की अब तक की सबसे अच्छी घरेलू बिक्री 10,217 ट्रैक्टरों द्वारा संचालित है, जो अप्रैल'21 में दर्ज 7,122 घरेलू ट्रैक्टरों की बिक्री से 43.5% की वृद्धि है। इसके साथ, कंपनी ने इतने उच्च विकास स्तरों पर भी उद्योग की अनुमानित 41% वृद्धि को पीछे छोड़ दिया है और नए वित्तीय वर्ष के दौरान फिर से असाधारण हासिल करने के लिए एक मजबूत मंच तैयार किया है।

भारत के अग्रणी ट्रैक्टर निर्माताओं में से एक, सोनालिका अनुकूलित ट्रैक्टर विकसित करने के लिए एक अद्वितीय दृष्टिकोण का पालन करती है जो किसानों की सभी महत्वपूर्ण जरूरतों को पूरा करती है चाहे वह खेती से संबंधित हो या ढुलाई से संबंधित हो। दुनिया भर में कृषि समृद्धि सुनिश्चित करते हुए, कंपनी ने पिछले दो वर्षों में अपने निर्यात को दोगुना कर दिया है और सभी क्षेत्रों में उनका विश्वास जीत लिया है। कंपनी को अपनी हैवी ड्यूटी रेंज के लिए जबरदस्त प्रतिक्रिया मिल रही है क्योंकि पिछले आधे दशक में यह हर साल 1 लाख से अधिक वार्षिक ट्रैक्टर बिक्री कर रही है। थ्ल'23 में प्रवेश करते हुए, सोनालिका वर्ष के दौरान नए उत्पाद लॉन्च के साथ पूरी तरह से तैयार है और दुनिया भर में अपने ग्राहकों को बेहतर सेवाएं सुनिश्चित करती है।

उन्होंने कहा,साल दर साल, हमने भारत से नंबर 1 ट्रैक्टर निर्यात ब्रांड की स्थिति का आदेश दिया है और केवल दो वर्षों में हमारे निर्यात की मात्रा को दोगुना कर दिया है। FY*22 के दौरान चुनौतियों पर काबू पाने के दौरान, हमने मजबूत गति का निर्माण जारी रखा और FY*23 में शानदार प्रदर्शन के लिए इसे आगे बढ़ाना सुनिश्चित किया। मौजूदा सकारात्मक धारणा, गेहूं की बंपर फसल और सामान्य मानसून की संभावना के साथ, बाजार की मांग ने धीरे-धीरे गति पकड़ी है। सोनालिका किसान की फसल और भूगोल की विशिष्ट जरूरतों को पूरा करने और समृद्ध भविष्य के लिए कृषि मशीनीकरण को गति देने में कोई कसर नहीं छोड़ेगी। FY*23 के लिए कमर कसते हुए, हम अपनी उत्पाद आक्रामक रणनीति का पालन करना जारी रखेंगे जिसमें नवीन नए ट्रैक्टरों के साथ-साथ उन्नत प्रौद्योगिकी उन्नयन शामिल हैं।

कंपनी के बारे में:

सोनालिका ट्रैक्टर्स, भारत का नंबर 1 निर्यात ब्रांड और भारत के अग्रणी ट्रैक्टर निर्माताओं में से एक, ने घरेलू और 130 से अधिक देशों में 13 लाख से अधिक ग्राहकों के साथ अपनी मजबूत उपस्थिति स्थापित की है। सोनालिका पंजाब में अपनी होशियारपुर सुविधा में 20-120 एचपी और 70 उपकरणों में सबसे व्यापक हैवी ड्यूटी ट्रैक्टर रेंज बनाती है जो दुनिया भर में ग्राहकों की विभिन्न आवश्यकताओं को पूरा करती है। कंपनी पिछले 5 वर्षों में लगातार 1 लाख से अधिक ट्रैक्टरों की बिक्री कर रही है और घरेलू बाजार में 41.6% की उच्चतम वार्षिक वृद्धि दर्ज की है जो कि 26.7 प्रतिशत की समग्र उद्योग वृद्धि से काफी अधिक थी। किसान केंद्रित ब्रांड होने के नाते, सरकार। भारत सरकार ने 2022 तक देश में किसान की आय को दोगुना करने के लिए नीति आयोग की प्रेरक परियोजना में योगदान देने के लिए सोनालिका को एकमात्र ट्रैक्टर ब्रांड के रूप में चुना है।

भारत से नंबर 1 निर्यात ब्रांड:

सोनालिका भारत का नंबर 1 निर्यात ब्रांड है और गर्व से भारत के बाहर के बाजारों में 1.8 लाख ग्राहकों के साथ जुड़ा हुआ है, जो 130 देशों में एक भारतीय कंपनी की स्वीकार्यता का सही संकेत है। सभी यूरोपीय देशों में 100% उपस्थिति के साथ, सोनालिका ट्रैक्टरों को विविध यूरोपीय परिस्थितियों में 25,000 से अधिक संतुष्ट ग्राहकों द्वारा सफलतापूर्वक संचालित किया जाता है। सोनालिका ने जर्मनी में एक स्पेयर पार्ट्स सेंटर भी स्थापित किया है जो बेहतर सेवा और ग्राहक संतुष्टि प्रदान करने के उद्देश्य से क्षेत्रीय आवश्यकताओं को पूरा करता है।

नंबर 1 हैवी ड्यूटी अनुकूलित फसल समाधान:

सोनालिका ट्रैक्टर पोर्टफोलियो को जरूरतों के अनुसार अनुकूलित किया गया है जो कुशल इंजनों से लैस है जो उच्च बिजली उत्पादन देते हैं और स्वामित्व और अनुभव की बेहतर कुल लागत के लिए कम रखरखाव के साथ सस्ती रहते हैं। सोनालिका 50 से अधिक एचपी ट्रैक्टर सेगमेंट में अग्रणी ब्रांड है और नेतृत्व की स्थिति हासिल करने के लिए 40 एचपी से अधिक सेगमेंट में अपनी उपस्थिति मजबूत कर रही है। कृषि मशीनीकरण विशेषज्ञ के रूप में, सोनालिका एग्रो सॉल्यूशंस फसल चक्र के विभिन्न चरणों को संबोधित करने के लिए भूमि की तैयारी से लेकर कटाई के बाद के कार्यों सहित अवशेष प्रबंधन तक के लिए उपकरणों की एक विस्तृत श्रृंखला प्रदान करता है।

सोनालिका ने कस्टम हायरिंग सेंटर्स में भी कदम रखा है, एक ऐसा प्लेटफॉर्म जो छोटे और सीमांत किसानों को किराए पर उन्नत कृषि मशीनरी तक पहुंच प्रदान करता है, जिससे लागत प्रभावी तरीके से कृषि उत्पादन में वृद्धि करना है। कंपनी ने किसानों को आवश्यक मशीनरी की आसान पहुंच के लिए 'एग्रो सॉल्यूशंस' ऐप पेश किया है, जिससे देश में कृषि मशीनीकरण को बढ़ावा मिल रहा है।

सोनालिका के बारे में अधिक जानकारी

सोनालिका ने द इकोनॉमिक टाइम्स द्वारा लगातार तीन साल (2017-2019), और 2018 और 2019 में एग्रीकल्चर टुडे द्वारा 'ग्लोबल इनोवेशन लीडरशिप अवार्ड' का 'आइकॉनिक ब्रांड ऑफ द ईयर' पुरस्कार जीता है। सोनालिका के उपाध्यक्ष, श्री ए.एस. मित्तल को ठज्टप द्वारा 'बिजनेस लीडर ऑफ द ईयर 2018-2019' पुरस्कार से सम्मानित किया गया है।

आयशर प्राइमा G3 – जज़्बा नया, जीत नई – EICHER PRIMA G3

आजकल टेक्नोलॉजी का समय है जिसकी मांग खेती में भी होने लगी है और अब भारत में भी ट्रेक्टर कंपनियां ट्रैक्टर्स में नई टेक्नोलॉजी देने लगे हैं. इसकी वजह से खेती का काम आसान ही नहीं बहुत आसान हो गया है. इस क्रम में आयशर ट्रैक्टर्स ने लॉन्च किया प्राइमा ळ3 दृ नए जमाने के किसानों के लिए प्रीमियम ट्रैक्टर रेंज के साथ. आयशर ट्रेक्टर को किसानों के बीच कम डीजल खपत वाला छोटा ट्रेक्टर के रूप में पहचान मिली हुई है. अगर कोई बोले की मेरे पास आयशर ट्रेक्टर है तो दूसरे किसानों की नजर में उस किसान को छोटा किसान मान लिया जाता है, भले ही वो उसका दूसरा ट्रेक्टर ही क्यों न हो जो की पानी लगाने और खेत का छोटा मोटा काम करने के लिए ही रखा हो. इसी सोच को बदलने के लिए कुछ वर्षो से आयशर ने बड़े ट्रैक्टर्स बाजार में निकालना शुरू किया है.

इसी कड़ी में आयशर ने स्टाइल और टेक्नोलॉजी का संगम प्रस्तुत किया है. जिसकी निम्नलिखित खासियतें हैं:

- प्रीमियम स्टाइलिंग के साथ विश्व स्तरीय डिजाइन
- उन्नत टेक्नोलॉजी के साथ उम्दा बनावट, बढ़िया फिट और कार्य क्षमता
- बेहतरीन आराम के लिए ऊँची सीट, बड़ा और आरामदायक प्लैटफॉर्म तथा वन-टच आगे से खुलने वाला बॉनेट

आयशर अपनी कम डीजल खपत और सर्वोत्तम काम के लिए जाना जाता है. जिसपर किसान का विश्वास बहुत पुराना है. अब आयशर ने टेक्नोलज्ञतनजप कमअ 050जी का तड़का भी लगा के दूसरी ट्रेक्टर कंपनियों के लिए भी एक उदहारण पेश किया है की अब भारतीय किसानों को भी ताकत और टेक्नोलॉजी का मिश्रण चाहिए.

आयशर ट्रैक्टर्स के नए प्राइमा G3 रेंज के साथ किसान की एक नयी व एक अलग पहचान बनेगी इसके साथ साथ किसान की सीट को भी इस तरह से डिजाइन किया गया है जिससे की उसे ज्यादा समय तक निरंतर कार्य करने के बाद भी थकन न हो.टैग लाइन भी उसी तरह से बनाई गई है पाएं शानदार स्टाइलिंग, उन्नत टेक्नोलज्ञतनजप कमअ 050जी और बेहतरीन आराम। आधुनिक ट्रैक्टरों की यह नई श्रृंखला, खास उनके लिए बनाई गई है, जिनकी पसंद होती है सदा सर्वोत्तम और बेस्ट!

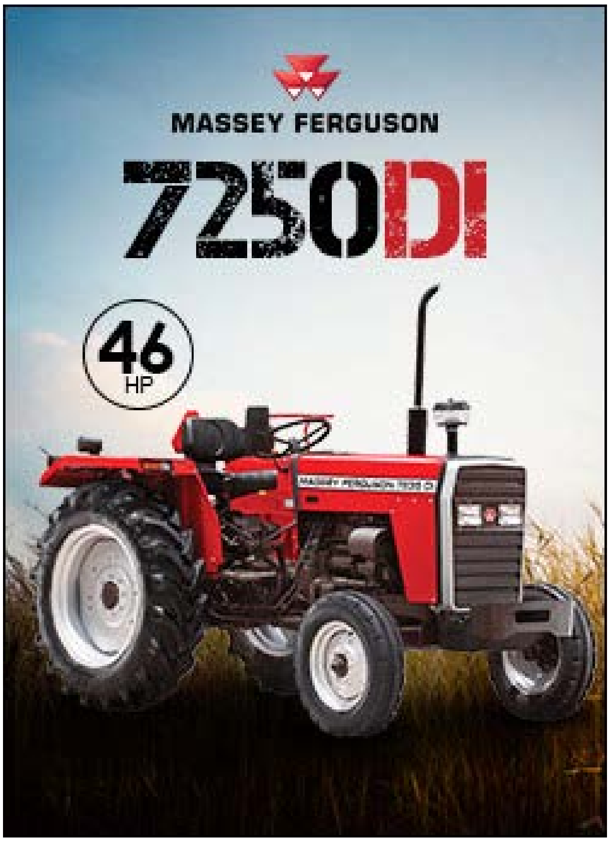

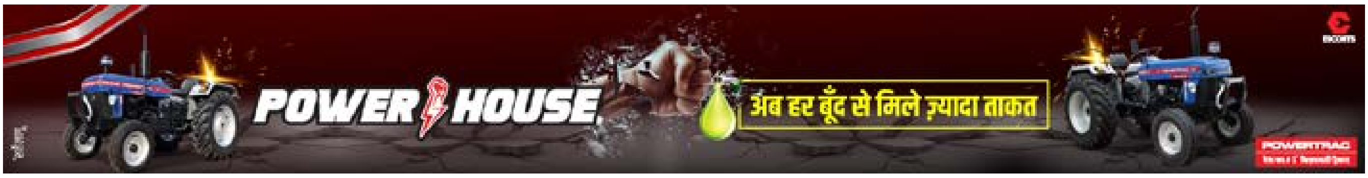

चौलाई की खेती कैसे करें

चौलाई की खेती किसानों के लिए बहुत ही आवश्यक होती है चौलाई को रामदाना तथा राजगिरी के नाम से भी पुकारा जाता है। चौलाई को लोग सब्जी के रूप में इस्तेमाल करते हैं चौलाई के फूल दिखने में बैंगनी और लाल रंग के होते हैं लोग चौलाई के साग को खाना काफी पसंद करते हैं। चौलाई के साग की पूरी जानकारी प्राप्त करने के लिए हमारी पोस्ट के अंत तक जरूर बने रहे।

चौलाई

सब्जियों में सबसे ज्यादा उपयोगी और प्रमुख फसल चौलाई की होती है। चौलाई एक ऐसी फसल है जिसका उत्पादन भारत तथा विभिन्न विभिन्न क्षेत्रों में होता है यह क्षेत्र कुछ इस प्रकार है। जैसे: दक्षिणी अमेरिका, पश्चिम अफ्रीका पूर्वी, अफ्रीका दक्षिण पूर्वी एशिया आदि क्षेत्रों में इसकी फसल का उत्पादन किया जाता है। किसानों के अनुसार चौलाई की लगभग 600 से 685 प्रजातियां होती है। यह प्रजातियां एक दूसरे के विपरीत भिन्न-भिन्न होती है। चौलाई को ज्यादा पैदावार करने वाला हिमालय क्षेत्र है यहां पर चौलाई की पैदावार अधिक मात्रा में होती है। इनकी विभिन्न विभिन्न किस्में अलग-अलग मौसमों में उगती हैं जैसे ग्रीष्म और वर्षा ऋतु आदि।

चौलाई की खेती

चौलाई के पौधे में विभिन्न विभिन्न प्रकार के औषधि गुण मौजूद होते हैं और इन्हीं कारणों की वजह से इनका उपयोग आयुर्वेदिक, औषधि बनाने में किया जाता है। सिर्फ चौलाई ही नहीं बल्कि इनकी जड़ ,तना ,पत्ती ,डंठल सभी आवश्यक होती हैं आयुर्वेदिक औषधि बनाने के लिए, विटामिन ए और सी तथा खनिज और प्रोटीन जैसे, आवश्यक तत्व चौलाई में मौजूद होते हैं। यदि आप पेट की बीमारी संबंधित समस्या से छुटकारा पाना चाहते हैं, तो आप लगातार चौलाई का सेवन करें। क्योंकि चौलाई का सेवन करने से पेट संबंधित सभी प्रकार की बीमारियां दूर हो जाती है। अर्ध शुष्क वातावरण चौलाई की खेती को बहुत ही ज्यादा महत्वपूर्ण बनाता है चौलाई की खेती के लिए शुष्क वातावरण उपयोगी होता है। किसान शुष्क मौसम में चौलाई की खेती करने की सलाह देते हैं।

चौलाई की खेती के लिए उपयुक्त मिट्टी

ज्यादातर किसान चौलाई की खेती कार्बनिक पदार्थों से भरपूर और जल निकास वाली भूमि मे खेती करना उचित बताते हैं। जो भूमि जलभराव वाली होती है वहां पर चौलाई की खेती नहीं करते , क्योंकि जलभराव वाली भूमि के कारण पौधे पूर्ण रूप से उत्पादन नहीं कर पाते, चौलाई की फसल की उत्पादकता की प्राप्ति करने के लिए भूमि का पीएच मान लगभग 6 से 8 के मध्य होना उपयोगी होता है

चौलाई की खेती के लिए जलवायु तथा तापमान

किसान गर्मी के मौसम में चौलाई की फसल की खेती करते हैं क्योंकि ठंड के मौसम में चौलाई की फसल पूर्ण रूप से उत्पादन नहीं कर पाती है। इसी कारण सबसे उचित मौसम गर्मी का होता है चौलाई खेती के लिए, चौलाई की खेती करने के लिए सबसे अच्छी जलवायु शीतोष्ण और समशीतोष्ण की होती है। यह दोनों जलवायु बहुत ही उचित होती हैं चौलाई की खेती के लिए। चौलाई के पौधों के लिए 20 से 25 डिग्री सेल्सियस के तापमान की आवश्यकता पड़ती है पौधों को अंकुरित होने के लिए, अंकुरित के बाद विकास में करीब 30 से 40 डिग्री के तापमान की जरूरत होती है।

चौलाई के पौधों की सिंचाई

यदि आप चौलाई के पौधों का रोपण सूखी भूमि इत्यादि में करते हैं तो बुवाई के तुरंत बाद ही खेतों में पानी देना जरूरी होता है।अगर भूमि का चयन पहले हो चुका है तो बीज रोपण के तुरंत बाद पानी देना उचित नहीं समझा जाता। जब तक बीज अंकुरित ना हो खेतों में नमी को बरकरार रखें। बीज अंकुरित हो जाए तो लगभग 20 से 30 दिनों के अंदर सिंचाई करें। हरे पत्तों की अच्छी प्राप्ति के लिए लगातार पौधों में पानी देते रहे।

चौलाई के लिए खाद की उपयोगिता

किसान चौलाई की अच्छी पैदावार के लिए सबसे अच्छी गोबर की खाद की सलाह देते हैं। इसमें लगभग 15 से लेकर 20 प्रति हेक्टेयर की आवश्यकता होती है तथा गोबर की खाद को खेतों में भली प्रकार से डाला जाता है। कुछ रसायनिक खादों का भी इस्तेमाल होता है जैसे रू रसायनिक उर्वरक 25 किलो डाई अमोनियम फास्फेट 80 से लेकर सौ किलो प्रति हेक्टेयर की मात्रा का इस्तेमाल होता है। कुछ ऐसे कीट भी होते हैं जिनकी वजह से चौलाई की फसल खराब हो जाती है। यह कीट कुछ इस प्रकार है जैसेरू पर्ण जालक,तना वीविल,तंबाकू की सुंडी इत्यादि। आप इन कीटो से चौलाई की फसल को बचाने के जैविक कीटनाशक दवाएं का इस्तेमाल कर सकते हैं।

चौलाई की बुवाई का समय

विशेषज्ञों द्वारा प्राप्त की गई जानकारियों के अनुसार भारत में लगभग दो बार चौलाई की फसल की बुवाई की जाती है। किसान पहली बुवाई फरवरी से मार्च तथा दूसरी बुवाई जुलाई के बीच में करते हैं। किसान बीज रोपण में पौधों की दूरी कम से कम 15 से 20 सेंटीमीटर की रखते हैं ताकि चौलाई की उत्पादकता अच्छी हो। बुवाई की इन प्रक्रियाओं को अपनाकर आप अच्छी फसल को प्राप्त कर सकते हैं। दोस्तों हम यह उम्मीद करते हैं कि हमारा यह आर्टिकल बेंनसंपेह आप को पसंद आया होगा। हमारे इस आर्टिकल में चौलाई साग की पूरी जानकारी दी गई है। कि चौलाई की खेती किस प्रकार से की जाती है , चौलाई के लिए उपयुक्त जलवायु है तथा विभिन्न विभिन्न प्रकार की जानकारी हमारे इस आर्टिकल में मौजूद है।हमारी इस आर्टिकल को आप ज्यादा से ज्यादा अपने दोस्तों के साथ शेयर।

चुकंदर की खेती
(Chukandar)

चुकंदर

चुकंदर एक ऐसा फल है जिसको लोग खाना बहुत पसंद करते हैं। लोग चुकंदर को सब्जियों के तौर पर पकाकर ,बिना पकाए ,कच्चा, आदि के रूप में खाना पसंद करते हैं। क्योंकि चुकंदर में विभिन्न विभिन्न प्रकार के औषधि गुण है जो शरीर को बहुत फायदा पहुंचाते हैं। चुकंदर का स्वाद थोड़ा मीठा होता है चुकंदर जमीन के अंदर पाए जाते हैं। लोग चुकंदर के फल के साथ ही साथ इनके पत्तों का भी इस्तेमाल करते हैं। सब्जी सलाद आदि के तौर पर, चुकंदर हमारे लिए इतना उपयोगी होता है कि कभी-कभी डॉक्टर विभिन्न प्रकार के रोग हो जाने पर चुकंदर खाने की सलाह देते हैं। जैसेरू खून की कमी ,एनीमिया, कैंसर ,हृदय रोग, पित्ताशय विकारों, बवासीर, गुर्दे के विकारों जैसी समस्या को दूर करने के लिए डॉक्टर चुकंदर खाने की सलाह मरीजों को देते हैं। इन कारणों से चुकंदर की मांग बहुत बढ़ जाती है और किसान इस फसल से काफी अच्छा धन निर्यात कर लेते हैं।

चुकंदर की फसल की खेती

चुकंदर जैसी लाभदायक फसल की खेती करने के लिए किसान ज्यादातर बलुई दोमट मिट्टी का इस्तेमाल करते हैं। चुकंदर की खेती करते समय किसान जलभराव वाली समस्या से बचने का भी पूर्ण ध्यान रखते हैं। क्योंकि जलभराव वाली भूमि चुकंदर के फल को पूरी तरह से सड़ा सकती हैं और विभिन्न प्रकार की समस्याओं को भी पैदा कर सकती है। खेती के लिए कम से कम भूमि का पीएच मान 6 से 7 के बीच का होना आवश्यक होता है।

चुकंदर की खेती के लिए जलवायु तथा तापमान

चुकंदर की फसल के लिए सबसे अच्छा मौसम ठंड का बताते हैं, क्योंकि ठंडी के मौसम में चुकंदर की फसल काफी अच्छी तरह से उत्पादन के साथ ही साथ, विकास भी भरपूर होता है। जो प्रदेश ठंडे होते हैं वहां चुकंदर की फसल को काफी उपयुक्त माना जाता है। चुकंदर एक ऐसी फसल है जिसके लिए बहुत ज्यादा बारिश की कोई आवश्यकता नहीं होती है।बारिश किसी भी प्रकार से चुकंदर की फसल को प्रभावित नहीं करती है। चुकंदर की फसल के लिए 20 डिग्री का तापमान इसकी फसल के लिए काफी होता है। सामान तापमान भी चुकंदर की फसल के लिए उपयुक्त समझा जाता है।

चुकंदर की फसल के लिए खेत को तैयार करना

सर्वप्रथम चुकंदर की फसल के लिए खेत को अच्छी तरह से तैयार करना आवश्यक होता है। चुकंदर की फसल को उगाने के लिए भूमि की अच्छी गहरी जुताई करनी चाहिए। जुताई के बाद खेतों को कुछ देर के लिए ऐसी ही खुला छोड़ना चाहिए। क्योंकि ऐसा करने से खेतों में भली प्रकार से धूप लग जाती है। चुकंदर की जड़े काफी गहराई में रहती है जिसके फलस्वरूप यह खनिज पदार्थों को ग्रहण करने की क्षमता नहीं रखते।।

उर्वरक की मात्रा अच्छे से देना जरूरी होता है खेत तैयार करते समय या खेतों के लिए उपयोगी माना जाता है। खेतों में किसान लगभग 14 से 15 गाड़ी पुरानी गोबर की खाद और कल्टीवेटर के जरिए, कम से कम दो से तीन बार तिरछी जुताई करते हैं जिससे मिट्टी में खाद अच्छे से भिन्न जाए। खेतों में पानी देने के बाद तीन से चार दिनों के लिए खेतों को ऐसे ही छोड़ देना आवश्यक होता है। जब मिट्टी पानी को अपने अंदर अवशोषित कर ले और ऊपरी सता सूखी नजर आने लगे तो रोटावेटर के जरिए जुताई कर लेनी चाहिए। खेतों को समतल करने के लिए पाटा लगाकर अच्छी तरह जुताई करें। इस प्रक्रिया से जमीन पूरी तरह से समतल हो जाती है और कोई भी जलभराव की समस्या नहीं पैदा होती।चुकंदर की फसलों के छिड़काव के लिए कुछ रसायनिक उर्वरकों का भी इस्तेमाल किया जाता है। जैसे रू नाइट्रोजन 40 किलो पोटाश 60 किलो तथा 80 किलो पोटाश की मात्रा प्रति हेक्टेयर का इस्तेमाल जुताई के लिए किया जाता है, यह आखरी जुताई होती है।

चुकंदर की बीजो की रोपाई, समय तथा तरीका

चुकंदर के लिए रोपाई का समय सबसे अच्छा ठंडी का होता है। बीज रोपण किसान अक्टूबर और नवंबर के महीने में करना शुरू कर देते हैं। बीज रोपण करने से पहले बीजो को अच्छी तरह से उपचारित कर लेना आवश्यक होता है। उपचारित करने से खेतों में किसी भी प्रकार का रोग नहीं लगता। अनुमान के हिसाब से एक हेक्टेयर खेत में लगभग 8 किलो बीजों की जरूरत पड़ती है। इन क्रियाओं के बाद बीज रोपण किया जाता है।

चुकंदर के पौधों की सिंचाई के तरीके

चुकंदर के पौधों की सिंचाई के लिए भूमि में नमी बरकरार रहना आवश्यक होता है। क्योंकि इससे पौधे बहुत अच्छी तरह से अंकुरित होते हैं। बीज रोपण के बाद सर्वप्रथम सिंचाई देनी चाहिए। जब बीज अंकुरित हो जाए ,तो आप खेतों में पानी की मात्रा को कम कर सकते हैं। चुकंदर के पौधों की सिंचाई लगभग 8 से10 दिनों के अंदर करते रहना चाहिए। दोस्तों हम उम्मीद करते हैं कि हमारा बीनांदकंत (ठममज त्ववज) वाला आर्टिकल आपको काफी पसंद आया होगा। इस आर्टिकल में चुकंदर की पूर्ण जानकारी दी गई है। जो आपके भविष्य में काम आ सकती है यदि आप हमारी दी हुई जानकारी से संतुष्ट हुए हैं। तो हमारी इस पोस्ट को ज्यादा से ज्यादा सोशल मीडिया और अन्य स्थानों और दोस्तों के साथ शेयर करें।

ऑफ सीजन में गाजर बोयें, अधिक मुनाफा पाएं

गाजर जो दिखने में बेहद ही खूबसूरत होती है और इसका स्वाद भी काफी अच्छा होता है स्वाद के साथ ही साथ विभिन्न प्रकार से हमारे शरीर को लाभ पहुंचाती है। गाजर से जुड़ी पूरी जानकारी प्राप्त करने के लिए हमारे इस पोस्ट के अंत तक जरूर बने रहें। जानें कैसे ऑफ सीजन में गाजर बोयें और अधिक मुनाफा पाएं।

ऑफ सीजन में गाजर की खेती दें अधिक मुनाफा

सलाद के लिए गाजर का उपयोग काफी भारी मात्रा में होता है शादियों में फेस्टिवल्स विभिन्न विभिन्न कार्यक्रमों में गाजर के सलाद का इस्तेमाल किया जाता है। इसीलिए लोगों में इसकी मांग काफी बढ़ जाती है, बढ़ती मांग को देखते हुए इनको ऑफ सीजन भी उगाया जाता है विभिन्न रासायनिक तरीकों से और बीज रोपड़ कर।

गाजर की खेती

गाजर जिसको इंग्लिश में ब्ंततवज के नाम से भी जाना जाता है। खाने में मीठे होते हैं तथा दिखने में खूबसूरत लाल और काले रंग के होते हैं। लोग गाजर की विभिन्न विभिन्न प्रकार की डिशेस बनाते हैं जैसेय गाजर का हलवा सर्दियों में काफी शौक और चाव से खाया जाता है। ग्रहणी गाजर की मिठाइयां आदि भी बनाती है। स्वाद के साथ गाजन में विभिन्न प्रकार के विटामिन पाए जाते हैं जैसे विटामिन ए (Vitamin A) तथा कैरोटीन (Carotene) की मात्रा गाजर में भरपूर होती है। अच्छे स्वास्थ्य के लिए कच्ची गाजर लोग ज्यादातर खाते हैं इसीलिए गाजर की खेती किसानों के हित के लिए काफी महत्वपूर्ण होती है।

गाजर की खेती करने के लिए जलवायु

जैसा कि हम सब जानते हैं कि गाजर के लिए सबसे अच्छी जलवायु ठंडी होती है क्योंकि गाजर एक ठंडी फसल है जो सर्दियों के मौसम में काफी अच्छी तरह से उगती है। गाजर की फसल की खेती के लिए लगभग 8 से 28 डिग्री सेल्सियस का तापमान बहुत ही उपयोगी होता है। गर्मी वाले इलाके में गाजर की फसल उगाना उपयोगी नहीं होता।

ऑफ सीजन में गाजर की खेती के लिए मिट्टी का उपयोग

किसान गाजर की अच्छी फसल की गुणवत्ता प्राप्त करने के लिए तथा अच्छी उत्पादन के लिए दोमट मिट्टी का ही चयन करते हैं क्योंकि यह सबसे बेहतर तथा श्रेष्ठ मानी जाती है। फसल के लिए मिट्टी को भली प्रकार से भुरभुरा कर लेना आवश्यक होता है। बीज रोपण करने से पहले जल निकास की व्यवस्था को बना लेना चाहिए, ताकि किसी भी प्रकार की जलभराव की स्थिति ना उत्पन्न हो। क्योंकि जलभराव के कारण फसलें सड़ सकती हैं , खराब हो सकती है, जड़ों में गलन की समस्या भी उत्पन्न हो सकती है तथा फसल खराब होने का खतरा बना रहता है।

गाजर की खेती का सही टाइम

किसानों और विशेषज्ञों के अनुसार गाजर की बुवाई का सबसे अच्छा और बेहतर महीना अगस्त से लेकर अक्टूबर तक के बीच का होता है। गाजर की कुछ अन्य किस्में ऐसी भी हैं जिनको बोने का महीना अक्टूबर से लेकर नवंबर तक का चुना जाता है और यह महीना सबसे श्रेष्ठ महीना माना जाता है। गाजर की बुवाई यदि आप रबी के मौसम में करेंगे , तो ज्यादा उपयोगी होगा गाजर उत्पादन के लिए तथा आप अच्छी फसल को प्राप्त कर सकते हैं।

ऑफ सीजन में गाजर की फसल के लिए खेत को तैयार करे

किसान खेत को भुरभुरी मिट्टी द्वारा तैयार कर लेते हैं खेत तैयार करने के बाद करीब दो से तीन बार हल से जुताई करते हैं। करीब तीन से 5 दिन के भीतर अपने पारंपरिक हल से जुताई करना शुरू कर देते हैं और सबसे आखरी जुताई के लिए पाटा फेरने की क्रिया को अपनाते हैं। खेत को इस प्रकार से फसल के लिए तैयार करना उपयुक्त माना जाता है।

गाजर की उन्नत किस्में

गाजर की बढ़ती मांग को देखते हुए किसान इनकी विभिन्न विभिन्न प्रकार की किस्मों का उत्पादन करते हैं। जो ऑफ सीजन भी उगाए जाते हैं। गाजर की निम्न प्रकार की किस्में होती है जैसे :

पूसा मेघाली

पूसा मेघाली की बुआई लगभग अगस्त से सितंबर के महीने में होती है। गाजर की इस किस्म मे भरपूर मात्रा में कैरोटीन होता है जो स्वास्थ्य के लिए बहुत ही लाभदायक है। यह फसल उगने में 100 से लेकर 110 दिनों का समय लेते हैं और पूरी तरह से तैयार हो जाती हैं।

पूसा केसर

गाजर कि या किस्म भी बहुत ही अच्छी होती है या 110 दिनों में तैयार हो जाती हैं। पूसा केसर की बुआई का समय अगस्त से लेकर सितंबर का महीना उपयुक्त होता है।

हिसार रसीली

हिसार रसीली सबसे अच्छी किस्म होती है क्योंकि इसमें विटामिन ए पाया जाता है तथा इसमें कैरोटीन भी होता है। इसलिए बाकी किस्मों से यह सबसे बेहतर किस्में होती है। यह फसल तैयार होने में लगभग 90 से 100 दिनों का टाइम लेती है।

गाजर 29

गाजर की या किस्म स्वाद में बहुत मीठी होती है इस फसल को तैयार होने में लगभग 85 से 90 दिनों का टाइम लगता है।

चौंटनी

चौंटनी किस्म की गाजर दिखने में मोटी होती है और इसका रंग लाल तथा नारंगी होता है इस फसल को तैयार होने में लगभग 80 से 90 दिन का टाइम लगता है।

नैनटिस

नैनटिस इसका स्वाद खाने में बहुत स्वादिष्ट तथा मीठे होते हैं या फसल उगने में 100 से 120 दिनों का टाइम लेती है।

मूली की खेती

सब्जियां हमारे शरीर के लिए बहुत ही उपयोगी होती हैं। सब्जियों में विभिन्न विभिन्न प्रकार के पोषक तत्व मौजूद होते हैं। जो हमारे शरीर को ऊर्जा प्रदान करती हैं जिससे हमारा शरीर कार्य करने योग बनता है। उन सब्जियों में से एक मूली भी है, जिनको खाने से हमें लाभ होता हैं। मूली की खेती की पूर्ण जानकारी प्राप्त करने के लिए हमारी इस पोस्ट के अंत तक जरूर बने रहे।

मूली की खेती

मूली की फसल किसानों के लिए बहुत ही उपयोगी होती है। यह कम लागत और कम समय में अच्छी उत्पादकता प्रदान करती है। जिससे किसानों को बड़े पैमाने पर इस फसल द्वारा फायदा पहुंचता है और किसान काफी अच्छे आय की प्राप्ति करते हैं।भारत में मूली उत्पादन करने वाले कुछ मुख्य क्षेत्र है जैसेरू पश्चिम बंगाल,असम, हरियाणा गुजरात, हिमाचल प्रदेश, उत्तर प्रदेश, बिहार आदि क्षेत्रों में मूली की खेती काफी उच्च कोटि पर की जाती है।

मूली की खेती के लिए उपयुक्त जलवायु

मूली की खेती करने के लिए सबसे उपयुक्त जलवायु ठंडी की होती हैं। ठंडी में मूली की फसल की अच्छी प्राप्ति होती है किसान ठंडी के मौसम में मूली की खेती कर बहुत ही अच्छा लाभ उठाते हैं। मूली की खेती के लिए 10 से 15 डिग्री सेल्सियस का तापमान बहुत ही ज्यादा उपयोगी होता है। कभी-कभी अधिक तापमान की वजह से मूली की जड़े कड़ी और कड़वी रह जाती है। इस प्रकार अधिक तापमान मूली की फसल के लिए उपयोगी नहीं है।किसानों द्वारा आप मूली की फसल को सालभर उगा सकते हैं पर उच्च मौसम ठंडी का है।

मूली की खेती के लिए भूमि को तैयार करना

मूली की खेती के लिए भूमि का अच्छे से चयन कर लेना चाहिए। किसान मैदानी और पहाड़ी दोनों इलाकों में बुवाई की सलाह देते हैं। किसान मैदानी क्षेत्रों में मूली की बुवाई का उचित समय सितंबर से जनवरी तक का उपयुक्त समझते हैं। वहीं दूसरी तरफ पहाड़ी इलाकों में मूली की बुवाई लगभग अगस्त के महीने तक होती है। मूली की खेती के लिए जीवांशयुक्त, दोमट मिट्टी या बलुई मिट्टी का इस्तेमाल करते हैं। खेती के लिए यह दोनों मिट्टी बहुत ही उपयोगी होती है। बुवाई करने के लिए मिट्टी के लिए सबसे अच्छा पीएच मान 6 पॉइंट 5 के आस पास रखना जरूरी होता है।

मूली की बुवाई

मूली की बुवाई से पूर्व खेतों को अच्छी तरह से जुताई की बहुत आवश्यकता होती है।खेत की जुताई आप को कम से कम 6 से 5 बार करनी होती है तब जाकर खेत अच्छी तरह से तैयार होते हैं। मूली की फसल गहरी जुताई मांगती है क्योंकि इसकी जड़े भूमि में काफी अंदर तक जाती है। जब जताई हो जाए तो इनको ट्रैक्टर या मिट्टी पलटने वाले हल द्वारा भी जुताई की जाती है। इसके बाद किसान करीब दो से तीन बार कल्टीवेटर खेतों में चला कर भी जुताई करते हैं। जुताई हो जाने के बाद पाटा लगाना अनिवार्य है।

मूली की खेती के लिए खाद एवं उर्वरक

मूली की खेती के लिए किसान कुछ सामान्य प्रकार की खाद का इस्तेमाल करते हैं। जैसेरू करीब 150 क्विंटल गोबर की खाद का यह फिर कम्पोस्ट का इस्तेमाल, नाइट्रोजन 100 किलो की मात्रा मे, स्फुर 50 किलो, 100 किलो लगभग पोटाश की आवश्यकता पड़ती है प्रति हेक्टेयर के हिसाब से, इन खादो को विभिन्न विभिन्न प्रकार से इस्तेमाल किया जाता है। जैसेरू स्फुर,पोटाश, गोबर की खाद को खेत तैयार करते वक्त इस्तेमाल किया जाता है। बुवाई के लगभग 15 से 30 दिनों के बाद दो भागों में विभाजित कर नाइट्रोजन का इस्तेमाल किया जाता है।

मूली की खेती के लिए सिंचाई

मूली की बुवाई, मूली की खेती करते समय भूमि में नमी बरकरार रखना आवश्यक होता है। यदि भूमि नम नहीं है तो बुवाई करने के तुरंत बाद हल्की पानी से सिंचाई कर दें ताकि फसल उत्पादन हो सके। वर्षा ऋतु के मौसमों में मूली की फसल को सिंचाई देने की कोई आवश्यकता नहीं होती है। वर्षा ऋतु में भूमि जल निकास की व्यवस्था को बनाए रखना आवश्यक होता है।

मूली की फसल गर्मी में 4 से 5 दिन के अंदर सिंचाई मांगती है।वहीं दूसरी ओर ठंडी के दिनों में मूली की फसल में 10 से 15 दिन के अंदर सिंचाई करना होता है। किसान आधी मेड़ की सिंचाई करते हैं इस प्रक्रिया द्वारा पूरी मेड़ में नमीयुक्त के साथ भुरभुरी पन बना रहता है।

मूली की फसल को कीट मुक्त रखने के उपाएं

मूली की फसल में विभिन्न विभिन्न प्रकार के कीट लग सकते हैं। फसल को कीट मुक्त बनाए रखने के लिए आपको खेत में खरपतवार की उचित व्यवस्था बनाए रखनी चाहिए। खेतों में समय समय पर आपको निराई गुड़ाई करते रहना जरूरी होता है। मूली की फसल के लिए गहरी जुताई करें और जब सबसे आखिरी जुताई करें, तो खाद-उर्वरक में 6 से 8 किलोग्राम फिप्रोनिल को खाद में भली प्रकार से मिलाकर खेतों में डालें। इन प्रतिक्रिया को अपनाने से खेतों में दीमक तथा कीटों से बचाव किया जाता है।

दोस्तों हम उम्मीद करते हैं कि आपको हमारा यह आर्टिकल मूली की खेती (त्ंकपी बनसजपअंजपवद पद पदकप) काफी पसंद आया होगा। हमारे इस आर्टिकल के जरिए आपने विभिन्न विभिन्न प्रकार की जानकारी प्राप्त की होगी। यदि आप हमारी दी गई जानकारी से संतुष्ट हैं। तो हमारे इस आर्टिकल को ज्यादा से ज्यादा अपने दोस्तों और सोशल मीडिया पर शेयर करें।

लीची की वैरायटी

दोस्तों आज हम बात करेंगे लीची के विषय में लीची की वैरायटी कितने प्रकार की होती है।लीची से हमें कितने प्रकार के लाभ हो सकते हैं और लीची के महत्वपूर्ण विषय के बारे में जिससे हमें लीची से संबंधित सभी प्रकार की जानकारियां प्राप्त हो जाए।लीची से जुड़ी आवश्यक जानकारियों को प्राप्त करने के लिए हमारी पोस्ट के अंत तक जरूर बने रहे।

लीची

लीची एक ऐसा फल है जो स्वाद में सबसे अलग है लीची की बढ़ती मांग दुनियाभर में प्रचलित है। लीची ना सिर्फ स्वादिष्ट बल्कि या विटामिन से भी भरी हुई होती है। यदि आपको अब तक इस बारे में कोई जानकारी नहीं है कि लीची को पैदावार करने वाला देश चीन है। लेकिन ऐसा नहीं है कि लीची सिर्फ चीन में ही पैदा होती है भारत भी इस की पैदावार की श्रेणी में आता है।

कृषि विशेषज्ञों के अनुसार लीची करीबन एक लाख टन से भी ज्यादा उत्पादन भारत देश में होता है। इसकी अच्छी क्वालिटी की मांग स्थानीय से लेकर अंतरराष्ट्रीय बाजारों में भी बड़े पैमाने में बढ़ चढ़कर इसकी मांगे होती है।फल के रूप में लीची का सेवन वैसे तो किया जाता है, लेकिन विभिन्न प्रकार के जूस या तरल पदार्थ में भी इसका इस्तेमाल किया जाता है। जैसे लीची का शरबत बनाना, जैम आदि का उपयोग करना, नेक्टर, कार्बोनेटेड और भी कई पिए जाने वाले पदार्थों में लीची का उपयोग किया जाता है।

भारत देश में लीची कहां पाई जाती है

भारत देश में विभिन्न ऐसे राज्य और क्षेत्र है, जहां पर लीची का उत्पादन काफी मात्रा में होता है। उनमें से एक बिहार क्षेत्र है जहां पर लीची का उत्पादन होता है। मुजफ्फरपुर तथा दरभंगा जिलो में लीची की काफी भारी मात्रा में पैदावार होती है, तथा बिहार के क्षेत्र पश्चिमबंगाल ,असम और भारत के उत्तराखंड तथा पंजाब लीची की पैदावार करने वाले क्षेत्र है।

लीची की खेती के लिए कैसे जलवायु उपयुक्त हैं

लीची के लिए उपयुक्त जलवायु जनवरी और फरवरी के महीने में आसमान खुला व खुला साफ रहता है,तो इस बीच काफी शुष्क हवाएं चलती है। जिससे लीची में बेहतर मंजरी यानी(नया कल्ला) बनती है। लीची उत्पादन के लिए सबसे अच्छी जलवायु समशीतोष्ण की होती है। जलवायु के इस प्रभाव से लीची के फल काफी अच्छे आते हैं। लीची मार्च और अप्रैल के महीने में काफी अच्छी तरह से विकसित होती है, क्योंकि कम गर्मी पड़ने से इसकी गुणवत्ता अच्छी होती है तथा लीची के गूदे का अच्छा विकास होता है। लीची के फूल जनवरी-फरवरी में खिलते हैं तथा मई-जून में यह पूरी तरह से विकसित होकर तैयार हो जाती हैं।

विशिष्ट जलवायु लीची की खेती के लिए बहुत ही उपयोगी होती है। लीची की खेती करने वाले मुख्य देश हैरू जैसे देहरादून की घाटी, उत्तर प्रदेश का तराई क्षेत्र, उत्तरी बिहार, झारखंड प्रदेश,आदि इन क्षेत्रों में लीची की पैदावार काफी आसानी के साथ भारी मात्रा में लीची का उत्पादन होता है।

लीची की खेती के लिए मिट्टी का चुनाव

लीची की खेती के लिए किसान जिस मिट्टी का चुनाव किसान करते हैं ,जिससे लीची की फसल काफी अच्छी हो वह मिट्टी अम्लीय एवं लेटराइट होती है। गहरी बलुई दोमट मिट्टी जिसकी क्षमता जल धारण करने के लिए अधिक हो वह लीची की खेती के लिए बहुत ही उपयोगी साबित होती है। परंतु ध्यान रखने योग्य बातें जलभराव वाले क्षेत्र लीची उत्पादन के लिए बिल्कुल भी सही नहीं होते हैं। लीची की खेती जल निकास युक्त जमीन में करना बहुत लाभदायक होता है।

लीची की वैरायटी

यदि हम बात करें लीची की वैरायटी की, तो भारत में काफी कम मात्रा में लीची की (वैरायटी धकिस्म) पाई जाती हैं।इसका मुख्य कारण यह हो सकता है,कि किसान इस की खेती या बुआई करने में काफी देरी कर देते हैं। इन्हीं कारणों की वजह से यह काफी कम मात्रा में पाई जाती है।कृषि वैज्ञानिकों के अनुसार कुछ वर्षो में किसानों ने अपनी जी तोड़ मेहनत के बल पर कई अनेक प्रकार की लीची की किस्मों की खेती की है।किसानों ने लीची की पैदावार को बढ़ाने के लिए इनकी अनेक प्रकार की किस्मों की काफी सहायता भी ली है।

लीची की कुछ प्रमुख किस्म इस प्रकार है

किसानों द्वारा दी गई जानकारियों के अनुसार इनकी कुछ किस्मों का हमें ज्ञात हुआ है जो निम्न प्रकार है;

NEW HOLLAND
AGRICULTURE

1) कलकतिया लीची

दोस्तों जानते हैं कलकतिया लीची कि जो खाने में ही बहुत ही ज्यादा स्वादिष्ट होती है और इनकी जो बीज होती है वह आकार में काफी बड़ी होती है। या कलकतिया लीची की बहुत ही अच्छी किस्म है। कलकतिया लीची के फल जुलाई के महीने में आते हैं। कलकतिया लीची की किस्म पूरी तरह से पकने में काफी लंबा टाइम लेते हैं। कलकतिया लीची लगभग 23 ग्राम की होती है बात करें इन के छिलकों की तो यह दिखने में हल्की मोती रंग के नजर आते हैं। लोग इस कलकतिया लीची की किस्म को बड़े ही चाव के साथ खाना पसंद करते हैं।

2) लीची की देहरादून किस्म

देहरादून के फल लोगों में बहुत ही ज्यादा लोकप्रिय होते हैं, देहरादून के फल लोग बहुत ही ज़्यादा पसंद करते हैं। लीची की या किस्म बहुत ही जल्दी समय में फल देती है। लीची कि यह किस्म जून के महीने में तोड़ने के लायक हो जाती है।इसके फल काफी तेजी से पकना शुरू कर देते हैं। लीची की यह किस्म की रंगत दिखने में लोगों को अपनी ओर बहुत ही आकर्षित करती हैं। इनमें दरारे जल्दी आ जाती है और छिलके फटने लगते है। लीची की देहरादून किस्म बहुत पौष्टिक होती है।

3) लीची की रोज सेंटेड किस्म

लीची की या किस्म खाने में मीठी होती है, दिखने में या एक गुलाब के तरह होती है।यह लीची की किस्म जून के महीने में पूरी तरह से पक जाती हैं।जब यह लीची पक जाती है तो दिखने में एकदम हृदय के आकार की प्रतीत होती है। बात करें, इसके भार की तो लगभग 18 ग्राम की होता है। इनके छिलके बैंगनी रंग के साथ बहुत ही पतला भी होते है। लीची की रोज सेंटेड किस्म बहुत भी पौष्टिक होती हैं।

4) लीची की अर्ली लार्ज रेड किस्म

लीची की अर्ली लार्ज रेड किस्म का बीज आकार बड़ा होता है। लीची की इस किस्म की खेती जून के महीने में होती है। इस लीची का भार 20 से 50 ग्राम का होता है। इस लीची के छिलके काफी हल्के होते हैं या दिखने में लाल रंग के होते हैं। इसमें मौजूद शर्करा 10 प्रतिशत पाया जाता है। तथा लीची की इस किस्म में लगभग 43ः अम्लता मौजूद होता है।

लीची की किस्मों से जुडी कुछ आवश्यक बातें

लीची की किस्मों से जुड़ी कुछ आवश्यक बातें शाही लीची तथा बेदाना और चाइना लीची कि किस्म बहुत ही उपयोगी मानी जाती है।शाही लीची की खेती बेदाना की तुलना में काफी मात्रा में की जाती है।क्योंकि शाही लीची पूर्ण रुप से गुणवत्ता से भरी हुई होती है और इस में कई तरह के पौष्टिक तत्व भी मौजूद होते हैं। दोस्तों हम उम्मीद करते हैं कि आपको हमारा लीची की वैरायटी का आर्टिकल काफी पसंद आया होगा।हमने अपने इस आर्टिकल में लीची की वैरायटी तथा लीची से जुड़ी सभी प्रकार की जानकारियों की पूरी डिटेल हमारे इस आर्टिकल में मौजूद है। यदि आप हमारी दी गई जानकारी से संतुष्ट है तो हमारे इस आर्टिकल को ज्यादा से ज्यादा अपने दोस्तों के साथ सोशल मीडिया पर शेयर करें।

अनार की खेती

दोस्तों आज हम बात करेंगे, अनार फल की जिसमें विभिन्न प्रकार के औषधि गुण मौजूद होते हैं। अनार एक बहुत ही फायदेमंद फल है यह दिखने में लाल रंग का होता है, इसमें बहुत सारे छोटे छोटे लाल रंग के रस भरे दाने होते हैं। अनार (चवउमहतंदंजम) को विभिन्न प्रकार के नाम से जाना जाता है, अनार को बहुत से लोग बेदाना भी कहते हैं। अनार के पेड़ में फल आने से पहले अनार के बड़े लाल लाल फूल आते हैं जो बेहद ही खूबसूरत लगते हैं।

अनार के फल की खेती

अनार की खेती बहुत से क्षेत्रों में होती है, लेकिन अनार की मुख्य पैदावार भारत के महाराष्ट्र में होती है। अनार की पैदावार के लिए मुख्य राज्य जैसेरू हरियाणा, पंजाब, राजस्थान, उत्तर प्रदेश आंध्र प्रदेश, कर्नाटक, गुजरात आदि क्षेत्रों में अनार की पैदावार छोटे स्तर पर की जाती है बगीचे द्वारा, अनार के रस बहुत ही ज्यादा स्वादिष्ट होते हैं, स्वादिष्ट होने के साथ इसमें कई तरह के औषधीय गुण भी मौजूद होते हैं। अनार के उत्पादन की बात करें, तो भारत में अनार का क्षेत्रफल लगभग 113.2 हजार हेक्टेयर उत्पादन तथा इनमें करीब 745 हजार मैट्रिक टन और उत्पादकता 6.60 मैट्रिक टन प्रति हेक्टेयर की खेती होती हैं।

अनार के लिए जलवायु

किसान अनार की पैदावार के लिए उपोष्ण जलवायु सबसे अच्छी बताते हैं। क्योंकि अनार उपोष्ण जलवायु का पौधा होता है। अनार को उगाने के लिए सबसे अच्छी जलवायु अर्द्ध शुष्क जलवायु होती हैं, इस जलवायु में अनार की पैदावार काफी अच्छी उगाई जा सकती है। अनार के फलों का अच्छी तरह से विकास और पूर्ण रूप से पकने के लिए गर्म वातावरण तथा शुष्क जलवायु की बहुत ही जरूरत होती है।

अनार के फलों की मिठास को बनाए रखने के लिए अच्छे तथा लंबे समय तक तापमान का उच्च रहना आवश्यक होता है। आर्द्र जलवायु के कारण फलों की गुणवत्ता को काफी अच्छा प्रभाव पड़ता है। अनार की खेती किसान समुंद्र तल से लगभग 500 मीटर से ज्यादा ऊंचे स्थानों पर करते हैं। अतः या जलवायु अनार की पैदावार को काफी अच्छा बढ़ावा देती है।

अनार के लिए मिट्टी का चयन

किसानों के अनुसार आप अनार को किसी भी मिट्टी में उगा सकते हैं, परंतु इसके अच्छे विकास और अच्छी फसल, तथा जल निकास के लिए जो सबसे अच्छी मिट्टी है। वह रेतीली दोमट मिट्टी है, या मिट्टी अनार की फसल के लिए सबसे सर्वोत्तम मानी जाती है।

Subscribe to our
YouTube Channel
www.youtube.com/c/MeriKheti

अनार के पौधों की सिंचाई

अनार के पौधों के लिए सिंचाई बहुत ही ज्यादा महत्वपूर्ण होती है, परंतु अनार के पौधे बहुत ही सूखे और सहनशील पौधा होता है। अनार के पौधों की सिंचाई के लिए मई का महीना सबसे अच्छा होता है, आप को मई से लेकर मानसून आने तक पूर्ण रूप से पौधों की सिंचाई करनी होती है। 10 से 15 दिनों के बीच पौधों की सिंचाई करनी चाहिए, क्योंकि वर्षा ऋतु होने के बाद फलों का काफी अच्छी मात्रा में विकास होता है। कई प्रकार की तकनीकों द्वारा किसान सिंचाई करते हैं जैसे ड्रिप, यदि जब आप ड्रिप से सिंचाई करें, तो इसकी आवश्यकता अनुसार ही करें। ड्रिप सिंचाई अनार की फसल के लिए बहुत ही ज्यादा उपयोगी साबित होती है। इसमें लगभग 40ः पानी की बचत होती है तथा 30 से 35ः उपज में वृद्धि भी होती है।

अनार के पौधों की सधाई

अनार के पौधों के लिए सधाई बहुत ही जरूरी होती है, इनके अच्छे विकास के लिए सधाई आप दो तरह से कर सकते हैं यह दो प्रकार निम्नलिखित है:

- **एक तना पद्धति की सधाई**
  इस प्रकार की सधाई में किसान एक तने को छोड़कर जो सभी बाहरी टहनियां होती है, उन सभी टहनियों को किसी तेज औजार द्वारा काटकर अलग कर देते हैं। यह सभी पद्धति द्वारा जमीन में बहुत सारे सतह से अधिक सकर को निकालती है। इस क्रिया द्वारा पौधा झाड़ नुमा हो जाता है। कभी-कभी इस विधि को अपनाकर तना छेदक का अधिक होने का भय भी बना रहता है। यदि हम इस पद्धति को व्यावसायिक उत्पादन की दृष्टिकोण से देखें तो यह बहुत ज्यादा उपयुक्त नहीं होती।
- **बहु तना पद्धति की सधाई**
  इस विधि में अनार के पौधों को इस प्रकार से सधाई किया जाता है, कि इस क्रिया द्वारा 3ध्4 तने को छोड़कर सभी टहनियों को काटकर अलग कर दिया जाता है। इस स्थिति में प्रकाश की अच्छी रोशनी पौधों पर पड़ती है जिसकी वजह से पेड़ पौधों में फूल और फल की अच्छी मात्रा आना शुरू हो जाती है।

अनार की तुडाई

अनार स्वाद में मीठे तथा इस में मौजूद पोषक तत्व इसको लोकप्रिय फल बनाते हैं, इसकी तुड़ाई कम से कम 120 दिन से लेकर 130 दिन के बाद करनी चाहिए। अनार को नान-क्लामेट्रिक फल भी कहा जाता हैं। अनार को तोड़ने से पहले यह जरूर देख लेना चाहिए, कि अनार पूर्ण रुप से पक गए हैं कि नही तभी इनकी तुड़ाई करें।

अनार में फल फटने का रोग

अनार के फल फटने का रोग किस कारण होता है, ऐसी कौन सी कमी होती है जिसकी वजह से अनार के फल फट जाते हैं, यदि आप इस चिंता से जूझ रहे हैं, तो हम आपको इस की सही वजह बताते हैं जिससे आपको इन फलों के फटने का कारण पता चल जाएगा।

- अनार के फलों के फटने का मुख्य कारण, किसी भी समय अचानक से सिंचाई देना इसका मुख्य कारण है।
- जब तापमान में अचानक से परिवर्तन आता है तो भी फल फटने का भय बना रहता है।
- कुछ ऐसे तत्व हैं जैसे बोरॉन और कैल्शियम जिनकी कमी के कारण फल फट जाते हैं।
- कभी-कभी अचानक से गर्म हवाएं भी चलती है जिसकी वजह से फलों पर काफी बुरा प्रभाव पड़ता है और फलों में फटने की समस्या उत्पन्न हो जाती है।

अनार के पौधे की देखभाल:

अनार के पौधों की देखभाल करने के लिए किसान पौधों में गोबर की खाद का इस्तेमाल करते हैं और इनमें उर्वरक भी डालते हैं। उर्वरक पौधों की गुणवत्ता को बढ़ावा देता है। किसान अनार के पौधों की देखभाल के लिए और उनकी उत्पादकता को बढ़ाने के लिए 600 से 700 ग्राम यूरिया तथा 200 ग्राम सुपर फास्फेट और 200 से 250 ग्राम पोटेशियम सल्फेट को मिलाकर करीब साल भर में डालना चाहिए। अनार के पेड़ों में पानी की मात्रा देते वक्त इन विभिन्न प्रकार की बातों का ध्यान रखें। कि पौधों के आसपास ज्यादा गड्ढे में पानी न भरे, जिसकी वजह से अनार की जड़ें कमजोर हो जाए, पानी पूर्ण रूप से निकास का मार्ग बनाए रहे। इन बातों का ख्याल जरूर रखें वरना जड़ गल कर कमजोर हो जाएंगी।

अनार में पाए जाने वाले विटामिन:

अनार में एक नहीं बल्कि कई तरह के विटामिन पाए जाते हैं, अनार खाने से त्वचा और बालों को बेहद फायदा होता है, त्वचा चमकती रहती हैं, और बालों की ग्रोथ अच्छी होती है। अनार में विटामिन के, सी बी के साथ द साथ आयरन, और फाइबर, जिंक, पोटेशियम, ओमेगा यह 6 फैटी एसिड जैसे पोषक तत्व भी मौजूद होते हैं।
यह सभी आवश्यक तत्व शरीर को स्वस्थ रखने के साथ ही साथ काम करने की क्षमता को भी बढ़ाते हैं।

रोजमेरी – सुगंधित पौधे की खेती

आम भाषा में कहे तो रोजमेरी एक जड़ी बूटी है जिसका वैज्ञानिक नाम त्वेंउंतपदने वपिबपदंसपे हैं, तथा हिंदी में इसको गुलमेहंदी के नाम से पुकारा जाता है। लेकिन ज्यादातर इसका परिचय रोजमेरी और गुलमेंहदी के नाम से ही होता हैं। ग्रहणी से प्राप्त की गई जानकारी के अनुसार रोजमेरी सबसे ज्यादा रसोई घर में पाए जाने वाली जड़ी बूटियों में से एक। रोजमेरी एक चिकित्सक पौधा है। जिसकी ज्यादातर पैदावार भूमध्यसागरीय क्षेत्र में होती है। रोजमेरी दिखने में पूरी तरह से सुई के आकार की होती है इसकी लंबाई लगभग 3 से 4 सेंटीमीटर की होती है। रोजमेरी के फूल दिखने में नीले रंग के होते हैं। रोजमेरी का स्वाद थोड़ा कड़वा और बहुत ज्यादा कसैला होता है तथा या गर्म भी होता है। रोजमेरी का उपयोग ज्यादातर सॉस, सूप स्टाफिंग, स्टॉज, रोस्ट्स इत्यादि के लिए किया जाता है। भारत देश में रोजमेरी की खेती कई क्षेत्रों में की जाती है यह क्षेत्र कुछ इस प्रकार है जैसेरू जम्मू-कश्मीर, उत्तराखंड, हिमाचल प्रदेश यह क्षेत्रों में रोजमेरी की खेती की जाती है।

रोजमेरी की बुवाई का समय

रोजमेरी की बुवाई करने के लिए किसान जो सबसे अच्छा समय चुनते हैं, वह अक्टूबर से फरवरी के बीच का होता है इस बीच रोजमेरी की बुवाई की जाती है। इन 2 माह मे बुवाई से रोजमेरी की अच्छी खेती की प्राप्ति होती है।

रोजमेरी खेती की बुवाई का तरीका

कृषि विशेषज्ञों के अनुसार रोजमेरी की खेती दो प्रकार से की जाती है, पहले आप रोजमेरी की खेती की बुवाई आप बीज द्वारा कर सकते हैं या फिर आप कटिंग यानी कलम विधि को अपनाकर इसकी बुवाई करें। इन दो बुवाई के तरीकों में से जो आपको बेहतर लगे उसे अपना कर आप रोजमेरी की बुवाई कर सकते हैं।

रोजमेरी नर्सरी तैयार करें

इन की नर्सरी तैयार करने के लिए आपको लगभग 2 किलो बीज की जरूरत पड़ती है तथा बीज प्रति हेक्टर की आवश्यकता होती है।

नर्सरी तैयार करने के लिए कम से कम 2 ग्राम बीज को प्रति 1 वर्ग मी भूमियों पर छिड़काव किया जाता है उसके बाद रेत से ढक देना होता है। बीज रोपण के बाद इनका जमाव लगभग 14 द्व 15 सेल्सियस डिग्री के तापमान पर होता है। रोजमेरी के पौधे 8 से 10 दिन के सप्ताह के अंदर पौधे के रूप में रोपण होने के लिए तैयार हो जाते हैं। प्रवर्धन कटिंग की प्रक्रिया को अपनाकर भी आप रोजमेरी का उत्पादन कर सकते हैं।

रोजमेरी पौधरोपण

किसान रोजमेरी पौधों का रोपण खेतों में लगभग 45 X 45 सेंटीमीटर की दूरियों पर इसके पौधों का रोपण करते हैं। इन दूरियों पर पौधारोपण करने से फसल को काफी अच्छा लाभ होता है।

रोजमेरी पौधों के लिए अनुकूल जलवायु

रोजमेरी पौधों के लिए जो सबसे उपयुक्त जलवायु होती है वह जलवायु शीतोष्ण है। शीतोष्ण जलवायु पौधों के लिए बहुत ही लाभदायक होती है। इन जलवायु में मौसम साल भर काफी ठंडा रहता है तथा पाला युक्त जलवायु की बहुत ज्यादा उपयोगिता होती है।

रोजमेरी खेती के लिए भूमि का चयन

रोजमेरी की खेती किसान विभिन्न विभिन्न प्रकार की भूमि में कर सकते हैं। इसके लिए किसी एक भूमि के चयन की कोई आवश्यकता नहीं होती है। हर प्रकार की भूमि में रोजमेरी की खेती कर सकते हैं। लेकिन किसान रोजमेरी की खेती के लिए हल्की कंकड़ से युक्त मृदा भूमि को ही उपयुक्त समझते हैं। भूमि को अच्छी तरह से जुताई की बहुत ही ज्यादा आवश्यकता होती है पौधारोपण से पहले, जुताई के बाद भूमि में खाद डालकर भूमि को समतल तथा भुरभुरा करना आवश्यक होता है।

रोजमेरी के लिए खेत को तैयार करना

किसी भी फसल की बुआई के लिए खेत को भिन्न भिन्न प्रकार से तैयार किया जाता है। लेकिन सबसे पहले खेतों को खूब अच्छी तरह से गहरी जुताई की आवश्यकता होती है। इन जुताई के बाद खेतों में अच्छी गोबर खाद को डालना आवश्यक होता है। जब आप गोबर की खाद को खेतों में डालें तो आपको भूमि को समतल कर देना है। भूमि समतल के बाद आपको मिट्टियों का भुरभुरा पन भी चेक कर लेना होता है। इन क्रियाओं के बाद सबसे आखिरी और आवश्यक बात जो खेत तैयार करने के लिए आवश्यक होती है। कि आपको जल व्यवस्था का खास ख्याल रखना होता है। आपको अच्छे प्रकार से जल निकास की व्यवस्था को बनाए रखना होता है।

रोजमेरी के लिए खाद एवं रासायनिक उर्वरक का इस्तेमाल

जैसा कि हमने आपको पहले ही बता दिया है। कि रोजमेरी एक जड़ी बूटी है, इसलिए ध्यान रखिए कि आपको किसी भी प्रकार की रसायनिक खाद का इस्तेमाल रोजमेरी की खेती के लिए नहीं करना है।

खेती के लिए किसानों को चाहिए, कि वह ओरिजिनल यानी बनाई हुई खाद का ही इस्तेमाल खेतों में करें। रोजमेरी की खेती के लिए किसान लगभग खेत को तैयार करने के लिए 20 टन अच्छी और सड़ी हुई गोबर की खाद का ही चयन करते हैं, तथा माइक्रो भू पॉवर 20 किलोग्राम का इस्तेमाल करते हैं। इन दोनों खादो को प्रति एकड़ के हिसाब से मिलाया जाता है।

खरपतवार नियंत्रण करना

विभिन्न प्रकार के खरपतवार से बचने के लिए तथा खरपतवार की रोकथाम के लिए किसानों को चाहिए। कि वह समय-समय पर आवश्यकतानुसार खेतों की जांच पड़ताल करते रहे। खरपतवार जैसी समस्या की रोकथाम के लिए समय समय पर निराई और गुड़ाई करें।

रोजमेरी खेतों की सिंचाई

रोजमेरी की खेती की बुवाई के बाद लगभग 3 से 4 बार सिंचाई की आवश्यकता होती है। इन तीन से चार बार सिंचाई हो जाने के बाद फिर आपको समय समय पर जब सिंचाई की आवश्यकता हो तभी सिंचाई करनी होगी। रोजमेरी की खेती के लिए सिंचाई बहुत ही आवश्यक होती है रोजमेरी फसल उत्पादन के लिए।

रोजमेरी फसल की कटाई

रोजमेरी फसल की कटाई लगभग पहले साल में फसल बुवाई के बाद 4 महीने के भीतर करनी होती है। जब रोजमेरी के 50: फूल आ जाए, तो उसके कोमल हिस्से को अलग करना होता है तथा इसके हर्ब्स को एकजुट करना होता है। किसान पहले साल में दो बार और तीसरे साल में तीन से चार बार करीबन हर्ब्स को प्राप्त करते हैं। हम उम्मीद करते हैं आपको हमारा यह टॉपिक रोजमेरी (Rosemary) सुगंधित फसल की खेती अच्छा लगा होगा। हमारे इस टॉपिक के माध्यम से आप ने रोजमेरी जैसे सुगंधित फसल की पूर्ण जानकारी प्राप्त की होगी। जो आपके भविष्य में रोजमेरी के विषय को लेकर काम आएगी। इस आर्टिकल में रोजमेरी की सभी जानकारियां दी गई है, यदि आप हमारी दी जानकारियों से संतुष्ट हुए हैं। तो हमारे इस आर्टिकल को ज्यादा से ज्यादा सोशल मीडिया और अपने दोस्तों के साथ शेयर करें।

खुरपका और मुंहपका रोग की रोकथाम की कवायद तेज

बरसात और बदलते मौसम के दौरान पशुओं में फैलने वाले खुरपका-मुंहपका रोग की रोकथाम को पशुपालन विभाग ने कवायद तेज कर दी है। इसके तहत पूरे मथुरा जनपद में आगामी 6 जुलाई तक 7.90 लाख पशुओं को वैक्सीन लगाकर टीकाकरण अभियान को पूरा करने के निर्देश दिए गए हैं। सोमवार को मुख्य विकास अधिकारी डॉ. नितिन गौड़ ने अभियान को हरी झंडी दिखाकर शुरुआत की।

- पिछले वर्ष हुई थी कई पशुओं की मौत, मथुरा।
  खुरपका-मुंहपका रोग की चपेट में आकर पिछले वर्ष जिलेभर में तीन दर्जन से ज्यादा पशुओं की मौत हो गई। विभाग का दावा कि इस बार अभी तक कोई केस सामने नहीं आया है, लेकिन बारिश होने के साथ रोग फैलने का खतरा बन सकता है। इसी को देखते हुए टीकाकरण अभियान को तेज कर दिया गया है।
- पिछले वर्ष हुई थी कई पशुओं की मौत, सहारनपुर। खुरपका और मुंहपका रोग की चपेट में आकर पिछले वर्ष गांव नवादा तिवाया में बरसात के दौरान करीब 15 पशुओं की मौत हुई थी। इसी तरह बेहट के घाड़ क्षेत्र में भी कई पशुओं की जान गई थी। विभाग का दावा है कि इस बार अभी तक कोई केस सामने नहीं आया है, लेकिन बारिश होने के साथ रोग फैलने का खतरा बना है। इसी को देखते हुए टीकाकरण अभियान को तेज कर दिया है।

रोग के लक्षण

- पशु के मुंह से से अत्यधिक लार का टपकना
- जीभ और तलवे पर छालों का उभरना एवं जीभ का बाहर आ जाना
- पशु के जुगाली करना बंद कर देना
- दूध उत्पादन में करीब 80 प्रतिशत की कमी।
- पशुओं का गर्भपात होना
- बछड़ों में अत्यधिक बुखार आने पर मृत्यु हो जाना।

ऐसे करें बचाव (खुरपका मुँहपका रोग नियंत्रण)

- रोग का पता लगने पर पशु को अन्य पशुओं से तुरंत दूर किया जाए
- दूध निकालने वाले व्यक्ति को हाथ और मुंह साबुन से धोना चाहिए
- प्रभावित क्षेत्र को सोडियम कार्बोनेट घोल पानी मिलाकर धोना चाहिए
- चिकित्सकों की सलाह लेकर पशु के तुरंत टीका लगवाने के साथ नियमित उपचार कराएं।
- स्वस्थ एवं बीमार पशु को अलग-अलग रखें
- बीमार पशुओं को स्पर्श करने के बाद व्यक्ति को सोडियम कार्बोनेट घोल से अपने हाथ पैर धोने चाहिए। क्योंकि, यह रोग मनुष्य भी फैल सकता है।
- जिस जगह पर पशु को रखते हों, वहां ब्लीचिंग पाउडर का छिड़काव करें।
- टीकाकरण के दौरान प्रत्येक पशु के लिए अलग-अलग सुई का प्रयोग कराया जाए।
- पशु के ठीक हो जाने पर 20 दिन बाद ही उसे दूसरे पशुओं के पास लाना चाहिए।

२०२२-२३ के लिए कृषि यंत्रों पर अनुदान प्राप्त करने के लिए

डा. कर्मचंद, हरियाणा

कृषि एवं किसान कल्याण विभाग के उप. निदेशक डा. कर्मचंद ने बताया कि किसानों के लिए 2022-23 स्कीम के तहत अनुदान देने के लिए विभिन्न कृषि यंत्रों पर विभाग के द्वारा आवेदन स्वीकार किए जा रहे हैं। कृषि यंत्रों में इच्छुक किसान इस योजना का लाभ लेने के विभागीय पोर्टल पर 27 मई तक आनलाइन आवेदन कर सकते हैं।

2022-23 के लिए कृषि यंत्रों पर अनुदान के तहत, श्री डॉ कर्म चंद बताया कि विभाग द्वारा कृषि यंत्रों जैसे- काटन सीड ड्रिल, ट्रैक्टर माउंटेड स्प्रे पंप, डायरेक्ट सीडेड राइस मशीन, ट्रैक्टर माउंटेड रोटरी वीडर (दो से तीन रो), पावर टीलर (12 एचपी से अधिक), ब्रिक्वेट मेकिंग मशीन, रीपर बाइंडर स्वचालित, मेज प्लांटर, मेज थ्रेसर, न्यूमेटिक प्लांटर पर आवेदन स्वीकार किए जा रहे हैं। इसमें व्यक्तिगत व सामान्य श्रेणी में अधिकतम 40 प्रतिशत व अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति, छोटे व सीमांत किसान और महिला किसान के लिए 50 प्रतिशत अनुदान दिया जाएगा।

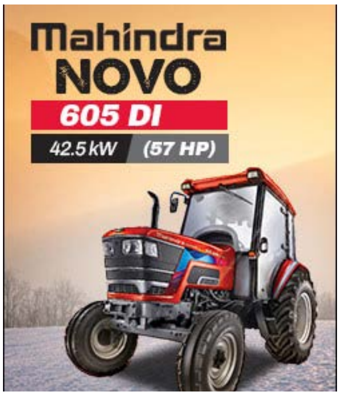

डा. कर्मचंद ने बताया कि 2022-23 के लिए कृषि यंत्रों पर अनुदान के लाभ लेने के इच्छुक किसान को मेरी फसल मेरा ब्यौरा पोर्टल पर अपना पंजीकरण कराना होगा, जिसके लिए किसान को एक शपथ पत्र व एक स्वयं घोषणा पत्र जमा करवाना होगा। वहीं आनलाइन आवेदन के लिए किसान के नाम जिला में पंजीकृत ट्रैक्टर की वैध आरसी (केवल ट्रैक्टर चालित यंत्रों के लिए) परिवार पहचान पत्र, बैंक खाता तथा आधार कार्ड की आवश्यकता होगी। इसके अलावा, एक किसान किसी भी तरह के अधिकतम तीन कृषि यंत्र ही ले सकता है और जिन किसानों ने पिछले पांच वर्षों में इन कृषि यंत्रों पर अनुदान लिया है वे इस स्कीम में उस कृषि यंत्र पर आवेदन करने के पात्र नहीं होंगे। आनलाइन आवेदन करने के लिए किसान को ढाई लाख से कम कीमत के यंत्रों के लिए 2500 रूपए एवं ढाई लाख या उससे अधिक कीमत के यंत्रों के लिए 5000 रुपये टोकन राशि अलग-अलग आनलाइन ही जमा करवानी होगी, जो कि चयन प्रक्रिया के पश्चात किसान के खाते में वापिस जमा करवा दी जाएगी।

शासन से अनुमति मिलने के बाद ही बेच सकते हैं बीज: जानें यूपी में कैसे मिलेगी बीज बेचने की अनुमति?

मथुरा।

यूपी में बीज बेचने से पहले शासन से अनुमित लेनी होगी। इसके लिए गाइडलाइंस जारी कर दिए गए हैं।

प्रमाणित और अप्रमाणित बीजों की आपूर्ति गैर प्रान्त की संस्थाएं विक्रेताओं को कर रहीं हैं। इनमें अधिकांश संस्थाएं हरियाणा, पंजाब, उत्तराखंड और राजस्थान की हैं। अब उत्तर-प्रदेश के बीज विक्रेताओं को आपूर्ति करने से पहले गैर प्रान्त की संस्थाओं को अपर कृषि निदेशक (बीज एवं प्रक्षेत्र) लखनऊ से अनुमति लेनी होगी। आपूर्ति से पहले उस बीज का भारत सरकार के शोध केन्द्र और प्रदेश में कृषि संस्थानों में कम से कम दो साल का ट्रायल भी होना आवश्यक है। इसके लिए फुटकर एवं बीज विक्रेताओं को निर्देश जारी किए गए हैं। जिला कृषि अधिकारी अश्विनी कुमार सिंह ने बताया कि अब केवल वही संस्थाएं बीज की आपूर्ति कर पाएंगी, जिनको अपर कृषि निदेशक (बीज एवं प्रक्षेत्र) लखनऊ से अनुमति जारी की गई होगी। जिस संस्था का बीज अपनी दुकान पर बेच रहे हैं, विक्रेता को उस संस्था से प्रदेश में बीज बिक्री की अनुमति की प्रति लेकर रखनी होगी।

कृषि विभाग जारी करता है बीज बिक्री का लाइसेंस

कृषि विभाग बीजों की बिक्री करने का लाइसेंस जारी करता है। थोक और फुटकर बीज विक्रेता के यहां बेचे जा रहे बीज की गुणवत्ता परखने को विभागीय अधिकारी समय-समय प4 निरीक्षण करते हैं। अब तक की कार्यवाई में पाया गया है कि हरियाणा, पंजाब, उत्तराखंड और राजस्थान आदि राज्यों के आपूर्तिकर्ता और बीज उत्पादक संस्था बीजों की आपूर्ति जिले में कर रहीं हैं। बीज विक्रेता किसानों को आपूर्तिकर्ता संस्था के बिल नहीं देते हैं। बीज विक्रेता यह भी पता नहीं करते कि जिस संस्था का बीज वह बेच रहे हैं, उस संस्था को प्रदेश में बीच बेचने की अनुमति मिली है या नहीं। इसलिए यह कदम उठाया गया है।

यूपी में कैसे मिलेगी बीज बेचने की अनुमति ?

बीजो के इस लाइसेंस को प्राप्त करने के लिए किसान के पास किसी प्रकार की डिग्री होने की आवश्यकता नहीं होती है द्य यदि वह खाद और दवा का लाइसेंस प्राप्त करना चाहते है, तो उसके लिए उसे खाद और दवा से सम्बंधित डिग्री की आवश्यकता होती है। इससे पहले इस तरह के लाइसेंस को प्राप्त करने के लिए ठैब-रसायन विज्ञान से डिग्री की जरूरत होती थी, किन्तु सरकार इस प्रक्रिया को और आसान कर दिया है अब बस 21 दिन के विशेष डिप्लोमे से इस लाइसेंस को प्राप्त किया जा सकेगा द्य इसके अलावा यदि आप ठैब-रसायन एग्रीकल्चर तब भी आप इसके लिए आवेदन के पात्र माने जायेंगे।

खाद्य लाइसेंस प्रक्रिया की फीस

यदि आप खाद के इन तीन लाइसेंस को प्राप्त करना चाहते है तो उसके लिए आपको निर्धारित फीस का भुगतान करना होता है द्य इस फीस का निर्धारण अलग-अलग राज्य के हिसाब से अलग-अलग रखी गयी है।

लाइसेंस का प्रकार	फीस
कीटनाशकों- दवाइयों के लाइसेंस के लिए	1500
बीज लाइसेंस के लिए	1000
खाद-उर्वरक लाइसेंस के लिए	1250

खाद-बीज लाइसेंस के लिए आवश्यक दस्तावेज

- आवेदन हेतु फॉर्म
- आधार कार्ड
- पैन कार्ड
- पासपोर्ट साइज फोटो
- करंट अकाउंट की बैंक पासबुक
- बायोडाटा की फोटो कॉपी
- 2-3 कंपनियों के प्रिंसिपल सर्टिफिकेट
- मान्य योग्यता डिग्री की फोटो कॉपी
- फीस का चालान
- जीएसटी सर्टिफिकेट
- दुकान या गोदाम का नक्शा
- क्षेत्रीय एनओसी अनापत्ति प्रमाण पत्र

जून माह के कृषि संबंधी आवश्यक कार्य

धान

धान की खेती मुख्य रूप से निचली भूमियों में की जाती है। साथ ही धान को ऊंची भूमियों एवं गहरे पानी में भी उगाया जाता है। धान उगाने विभिन्न विधियों में से उत्तरी भारत के लिए धान सघनता पद्धति, एरोबिक धान पद्धति एवं रोपाई विधि अधिक महत्वपूर्ण है। अतः उपरोक्त तीनों विधियों का उल्लेख विस्तार से किया जा रहा है।

धान की परंपरागत रोपाई विधि

समय पर बुवाई सुनिश्चित करने के लिए धान की पौध की बुवाई का कार्य मध्य जून तक अवश्य कर लेना चाहिए। पौधशाला में बीजों को नम रखें और इसके बाद धीरे-धीरे पानी के स्तर को बढ़ाते हुए 3-4 सें.मी. बनाए रखें। दोपहर के समय पानी लगाने से अधिक तापमान के कारण पौधे झुलसा जाते है, अतः पौधशाला में सिंचाई शाम के समय में करें। नर्सरी में समय-समय पर हाथ द्वारा खरपतवार निकलते रहें। यदि यह संभव न हो तो रसायनों की मदद से भी खरपतवारों का नियंत्रण किया जा सकता है। प्रेटीलाक्लोर प्लस सेफनर (0.75 कि.ग्रा. सक्रिय तत्व / है) की आवश्यक मात्रा को 40-50 कि.ग्रा. बारीक रेत में मिलाकर प्रति हैक्टेयर की दर से प्रयोग करें। पौधशाला में कीटों का प्रकोप होने पर क्लोरपायरिफास अथवा इमेडाक्लोप्रीड कीटनाशी के 0.5 कि. ग्रा. सक्रिय तत्व का प्रति हैक्टेयर की दर से छिड़काव करें। यदि पौध 10-15 दिन उम्र की हो गई। है तो उसमे 6 10 कि.ग्रा. यूरिया प्रति 1000 वर्ग मीटर नर्सरी क्षेत्र में बुरकाव करें। यदि पौधशाला में जस्ते (जिंक) की कमी के लक्षण प्रतीत हों तो 0.5ः जिंक सल्फेट 0.25ः बुझे हुए चूने के घोल का जरूरत के हिसाब से छिडकाव करें। यदि पौध की, विशेषकर ऊपरी पत्तियों पीली होने के बाद सफेद रंग की होकर सूख जाएँ तो यह लौह (आयरन) तत्व की कमी का लक्षण है। इसके निदान के लिए 19ः फेरस सल्फेट 0.5ः चूने के घोल का एक सप्ताह के अंतराल पर 2-3 बार छिडकाव करें। कई बार नर्सरी में लगातार पानी खड़ा रखने से भी लौह तत्व की कमी दूर हो जाती है।

धान की पौध की रोपाई

रोपाई के लिए पौध उखाड़ने से एक दिन पहले नर्सरी में पानी लगा दें और पौध उखाड़ते समय सावधानी रखें। पौधों की जड़ों को धोते समय नुकसान न होने दें तथा पौधों को काफी नीचे से पकड़े। पौध की रोपाई पंक्तियों में करें पंक्ति से पंक्ति की दूरी 20 से. मी. तथा पौधे से पौधे की दूरी 10 सें.मी. रखनी चाहिए। एक स्थान पर 2 से 3 पौधे ही लगाएं।

उर्वरकों का प्रयोग भूमि परीक्षण के आधार पर करना चाहिए। धान की बौनी किस्मों के लिए 120 कि.ग्रा. नाइट्रोजन, 60 कि.ग्रा. फॉस्फोरस, 40 कि.ग्रा. पोटाश एवं 25 कि.ग्रा. जिंक सल्फेट / है, बासमती किस्मों के लिए 100-120 कि.ग्रा. नाइट्रोजन, 50-60 कि.ग्रा., फॉस्फोरस, 40-50 कि. ग्रा. पोटाश एवं 20-25 किग्रा जिंक सल्फेट / है, और संकर धान के लिए 130-140 कि.ग्रा. नाइट्रोजन, 60-70 कि.ग्रा. फॉस्फोरस 50-60 कि. ग्रा. पोटाश एवं 25-30 कि.ग्रा. जिंक सल्फेट / है, संस्तुत किया गया है।

धान सघनता विधि (एसआरआई पद्धति)

इस पद्धति को सिस्टम ऑफ राइस इन्टेंसिफिकेशन (एस. आर.आई.) अथवा धान सघनता पद्धति के नाम से जाना जाता है। इस विधि से धान उगाने से परंपरागत धान पद्धति से धान उगाने की तुलना में 30-40 प्रतिशत कम पानी की आवश्यकता होती है। इस पद्धति से धान उगाने के लिए पौध की रोपाई योग्य उम्र 8-11 दिन अथवा अधिकतम 2 सप्ताह संस्तुत की गई है। इस अवस्था की पौध को उखाड़ने एवं खेत में लगाने के बीच कम से कम समय होना चाहिए। खेत की तैयारी परंपरागत तरीके से की जाती है। खेत में पानी खड़ा करके मिट्टी पलटने वाले हल अथवा पडलर से 2-3 बार जुताई कर के पाटा लगा देते हैं। पौध की रोपाई 25 सें. मी. ख 25 सें.मी. या 30 सें.मी. ख 30 सें. मी. दूरी पर की जाती है और एक स्थान पर एक ही पौधा रोपा जाता है।

इस विधि की मुख्य विशेषता यह है कि खेत में खड़ा हुआ जल (जलाक्रांत) नहीं रखते है बल्कि खेत को हमेशा नमी युक्त रखना आवश्यक है। बार-बार कुछ अंतराल पर हल्की व नियमित सिंचाई करना एवं खेत को पानी भराव रहित रखना पड़ता है ताकि मिट्टी में पर्याप्त वायु संचार हो सके। धान सघनता पद्ध ति में पोषक तत्वों की पूर्ति जैविक स्रोतों जैसे कम्पोस्ट, गोबर की खाद एवं हरी खाद आदि से की जानी चाहिए। यदि जविक स्रोत पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध न हों तो आवश्यक पोषक तत्वों की आपूर्ति उर्वरकों एवं जैविक स्रोतों दोनों के एकीकृत प्रयोग द्वारा की जा सकती है। खरपतवार नियंत्रण के लिए हस्तचालित अथवा शक्तिचालित रोटेटिंग हो या कोनो वीडर का प्रयोग संस्तुत किया गया है। इस विधि से खरपतवार नियंत्रण के साथ-साथ मिट्टी में वायुसंचार भी बढ़ता है जिससे कि जड़ों का विकास अच्छा होता है। साथ ही खरपतवार मिट्टी में मिल जाने के बाद उसमे जैव पदार्थ की। मात्रा बढ़ाते हैं जो कि लाभदायक सूक्ष्म-जीवों की संख्या में वृद्धि करता है।

एरोबिक (वायवीय) धान / सीधी बुवाई धान

यह धान उगाने की एक आधुनिक विधि है जिसमें कम पानी की आवश्यकता होती है। क्योंकि एरोबिक धान की जल-उत्पादकता प्रचलित विधि से धान उगाने की तुलना में अधिक होती है। एरोबिक (वायवीय) विधि से धान उगाने के लिए अधिक उपज देने वाली प्रजातियोंध्संकरों की लेवरहित (अन-पडल्ड) दशा में सीड ड्रिल अथवा देसी हल से सीधे खेत में बुवाई करते हैं और गेहू की भांति धान को उगाया जाता है। खेत में पानी भरा हुआ रखने के बजाय सिर्फ नम रखा जाता है तथा आवश्यकतानुसार लगातार अन्तराल पर फसल में सिंचाई भी करते रहते हैं। सीड ड्रिल से बुवाई करने पर 20-25 कि.ग्रा./ हैक्टेयर बीज की आवश्यकता होती है। पंक्ति से पंक्ति की दूरी 25 सें.मी. रखनी चाहिए। यदि खेत में नमी पर्याप्त न हो तो फसल को पलेवा करने के बाद बोया जाए अथवा बुवाई के तुरंत बाद एक हल्का पानी लगाना चाहिए। उत्तरी भारत में इसकी बुवाई का उपयुक्त समय जून का महीना है। एरोबिक धान के लिए मृदा उर्वरता के अनुसार, 120-150 कि. ग्रा. नाइट्रोजन 60 कि.ग्रा. फॉस्फोरस एवं 40-60 कि.ग्रा. पोटाश प्रति हैक्टेयर की संस्तुति की गई है।

एक-तिहाई नाइट्रोजन एवं फॉस्फोरस व पोटाश की संपूर्ण मात्रा बुवाई के समय कूड़ों में डालना अति-लाभकारी है। नाइट्रोजन की शेष दो-तिहाई मात्रा को दो बराबर भागों में बांटकर कल्ले बनते समय और पुष्पावस्था पर देना चाहिए। एरोबिक धान में प्रायः लौह तत्व की कम उपलब्धता की समस्या आ सकती है। लौह तत्व की कमी के लक्षण पौधों पर इस प्रकार है द्द पत्तियों की शिराओं के बीच पीलापन आना, धीरे-धीरे संपूर्ण पत्तियों का पीला हो जाना और अंतत पौधों के शेष भागों का पीला हो जाना आदि। जिन मृदाओं में लौहतत्व की कमी हो औरध्अथवा फसल पर लौहतत्व की कमी प्रतीत हो तब 2 प्रतिशत फेरस सल्फेट का घोल कल्ले फूटने के उपरांत 15 दिन के अंतराल पर आवश्यकतानुसार 2-3 बार छिड़क देना चाहिए। एरोबिक धान में खरपतवारों की बढ़वार भी प्रायः एक गंभीर समस्या होती है। बुवाई के 2-3 दिन के अंदर पडिमिथालिन 1 कि.ग्रा. हेक्टेयर या प्रेटीलाक्लोर 0.75 कि.ग्रा. हैक्टेयर की दर से छिड़कने पर खरपतवारों की समस्या को कम किया जा सकता है। बुवाई के 20 दिन बाद बिसपायिरीबेक-सोडियम 20 ग्राध्हेक्टेयर का छिड़काव करके बाद में उगने वाले खरपतवारों की रोकथाम भी की जा सकती है। एरोबिक धान में सूत्रकृमियों (निमॅटोड्स) द्वारा हानि की भी प्रबल संभावना बनी रहती है। इनके नियंत्रण के लिए कार्बोफ्यूरॉन 3 जी की 25-30 कि.ग्रा./ है मात्रा का प्रयोग करें।

सोयाबीन

सोयाबीन की सफल खेती के लिए उपजाऊ, अच्छे जल निकासी वाली, लवण-रहित, मध्यम से भारी दोमट मिट्टी की आवश्यकता होती है। खेत की तैयारी के लिए एक बार गहरी जुताई एवं दो बार कल्टीवेटर या हैरो चलाकर पाटा लगा देना चाहिए ताकि खेत समतल हो जाए। सोयाबीन की खरीफ फसल की बुवाई जून-जुलाई में की जाती है। क्षेत्र विशेष में बुवाई का उपयुक्त समय इस प्रकार हैरू उतरी पहाड़ी क्षेत्र जूनय उतरी मैदानी क्षेत्र जून मध्य से जुलाई मध्य, मध्य क्षेत्र दृ जून मध्य से जुलाई मध्य, दक्षिणी क्षेत्र जून मध्य से जुलाई अंत, और उत्तर पूर्वी क्षेत्र जून मध्य से जुलाई मध्य सोयाबीन की सफल खेती के लिए बीज की उपयुक्त मात्रा होनी चाहिए। यदि बीज के जमने की क्षमता कम है तो बीज की मात्रा उसी हिसाब से बढ़ा देनी चाहिए। बीज का चुनाव करते समय यह ध्यान रखना चाहिए कि बीज ज्यादा पुराना न हो क्योंकि एक साल के बाद इसकी अंकुरण की क्षमता कम हो जाती है। बीज दर बीज के आकार पर इस प्रकार रखें:

छोटा दाना 60 से 65 कि. ग्रा. प्रति हैक्टेयर, मध्यम दाना 70 से 75 कि. ग्रा. प्रति हैक्टेयर और मोटा दाना - 80 से 85 कि. ग्रा. प्रति हैक्टेयर बुवाई से पहले बीज को 2 ग्राम थीरम व 1 ग्राम कार्बेन्डाजिम प्रति कि. ग्रा. बीज के हिसाब से भली प्रकार उपचारित कर लेना चाहिए। इसके बाद राईजाबीयम एवं पीएसबी जीवाणु टीके से बीज को उपचारित करें। सोयाबीन की बुवाई कतारों में करनी चाहिए। कतार से कतार की दूरी उत्तर भारत के क्षेत्रों में 45-60 से. मी. और अन्य क्षेत्रों में 30-45 सें.मी. तथा पौधे से पौधे की दूरी 5 सें.मी. होनी चाहिए। बुवाई 3-4 सें.मी गहराई पर करनी चाहिए। अधिक गहराई से अंकुरित बीज को ऊपर आने में अधिक समय लगता है और पौधों की वृद्धि पर बुरा असर पड़ता है। सोयाबीन से अच्छा उत्पादन लेने के लिए लगभग 5-10 टन प्रति हैक्टयर अच्छी सड़ी हुई गोबर की खाद बुवाई से लगभग 20-25 दिन पहले खेत में अच्छी तरह से मिला देनी चाहिए। इसके अलावा सोयाबीन बीज को जीवाणु टीके से भी उपचारित करना चाहिए। सोयाबीन की खेती के लिए पोषक तत्वों की मात्रा हैरू नाइट्रोजन 20-25 कि.ग्रा., फास्फोरस 60-80 कि. ग्रा. पोटाश 40-50 कि.ग्रा. एवं गन्धक 20-25 कि. ग्रा. प्रति हैक्टेयर खरपतवार नियंत्रण के लिए पैन्डी. मिथालीन या मैटालक्लोर 1 कि. ग्रा. प्रति है, 750-800 लीटर पानी में घोलकर बुवाई के तुरंत बाद छिड़काव करें

अरहर

सिंचाई की सुविधा उपलब्ध होने पर जून के प्रथम पखवाड़े में बुवाई करना लाभप्रद रहता है। उत्तरी-पश्चिमी क्षेत्रों जैसे पंजाब, हरियाणा, राजस्थान, दिल्ली एवं पश्चिमी उत्तर प्रदेश के इलाके में जून के दूसरे सप्ताह में पलेवा करके अरहर की अगेती किस्मों की बुवाई करें। उत्तर-पूर्वी क्षेत्रों जैसे बिहार, बंगाल और पूर्वी उत्तर प्रदेश में अरहर की बुवाई मानसून की पहली बरसात के बाद जून के अंतिम सप्ताह में शुरू होती है।

उत्तर-पश्चिमी क्षेत्र (उत्तर प्रदेश, हरियाणा, पंजाब और उत्तरी राजस्थान) के लिए अरहर की उपयुक्त किस्में हैं: पूसा 992, पूसा 991, पूसा 2001 एवं पूसा 2002, और उत्तरी-पूर्वी क्षेत्र (मध्यम और पूर्वी उत्तर प्रदेश, बिहार, पश्चिम बंगाल और आसाम) के लिए अरहर की उपयुक्त किस्में हैं: आजाद, विरसा अरहर - 1, नरेन्द्र अरहर-1, बी. 7 (श्वेता), एम.ए.एल 13. आदि। बीज बोने से पहले उसे जीवाणु टीका तथा फंफूदीनाशक दवा से उपचारित करें। पहले बीज को फंफूदीनाशक दवा बाविस्टीन 2 ग्राम प्रति कि.ग्रा. बीज की दर से उपचारित करना चाहिए। उसके बाद ही जीवाणु टीका से उपचारित करें। बीज की मात्रा 15-20 कि.ग्रा./ हैक्टेयर होनी चाहिए जो कि बीज के आकार और बुवाई में पंक्तियों एवं पौधों की दूरी पर निर्भर करती है। बलुई-दुमट या दुमट मृदा में, जहां नाइट्रोजन की मात्रा कम हो, प्रति हैक्टेयर 20 से 30 कि.ग्रा. नाइट्रोजन डालना आवश्यक होता है। फास्फोरस एवं पोटाश की मात्रा यदि मृदा में कम हो तो प्रति हैक्टेयर 80 से 100 कि.ग्रा. फास्फोरस तथा 40 से 60 कि.ग्रा. पोटाश डालना चाहिए। अरहर की अगेती किस्मों के लिए प्रति हैक्टेयर 20 कि.ग्रा. नाइट्रोजन 60 कि.ग्रा. फास्फोरस और 40 कि.ग्रा. पोटाश की सिफारिश की गई है। जून के प्रथम सप्ताह में बोई गई फसल को वर्षा प्रारंभ होने से पहले दो या तीन हलकी सिंचाई देना आवश्यक होता है। यदि वर्षा का वितरण ठीक प्रकार से न हो और मौसम लम्बे समय तक सूखा रहे तो एक सिंचाई फूल निकलने के पहले और दूसरी उसके उपरांत फलियां बनते समय देनी चाहिए। खुरपी या कसोला या कस्सी के द्वारा फसल बुवाई के 30 और 45 दिन बाद दो निराई-गुड़ाई कर के खरपतवारों पर नियंत्रण पाया जा सकता है। रासायनिक खरपतवार नियंत्रण के लिए एलाक्लोर (2 कि.ग्रा. / हैक्टेयर) या पैन्डीमेथालिन (1 किग्रा / हैक्टेयर) 600 लिटर पानी में घोल बनाकर बुवाई के तुरंत बाद छिड़क दें।

मेरी खेती

krishan@merikheti.com | www.merikheti.com